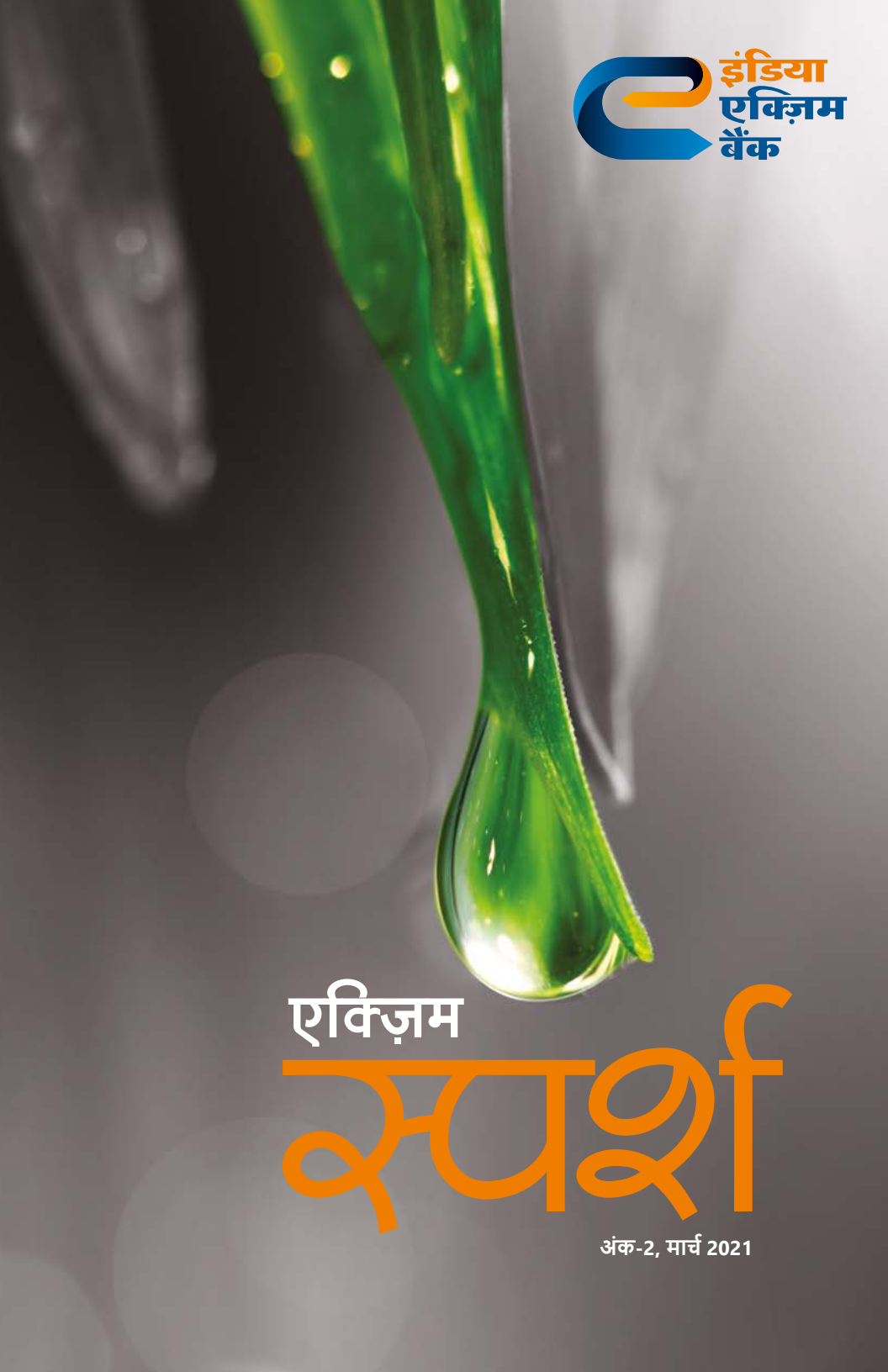

इंडिया एक्ज़िम बैंक

एक्ज़िम स्पर्श

अंक-2, मार्च 2021

इंडिया एक्ज़िम बैंक
India Exim Bank

टीम स्पर्श

अर्चना मदान
मुख्य प्रशासनिक प्रबंधक

रवि सिंह
सहायक महाप्रबंधक

स्वाति जांगड़ा
मुख्य प्रबंधक

विकास वशिष्ठ
प्रबंधक

रुखसार आलम
प्रशासनिक अधिकारी

पृष्ठ सज्जा
दयानन्द चौरसिया

नई दिल्ली कार्यालय से प्रकाशित ई-पत्रिका
अंक-2, मार्च 2021
ndo.rajbhasha@eximbankindia.in

डिस्क्लेमरः इस ई-पत्रिका में आपकी नज़रों से गुज़रने वाली तस्वीरें इंडिया एक्ज़िम बैंक के किसी न किसी अधिकारी द्वारा ली गई हैं और कोई भी सामग्री इंटरनेट से नहीं ली गई है।

उम्मीद का दीया

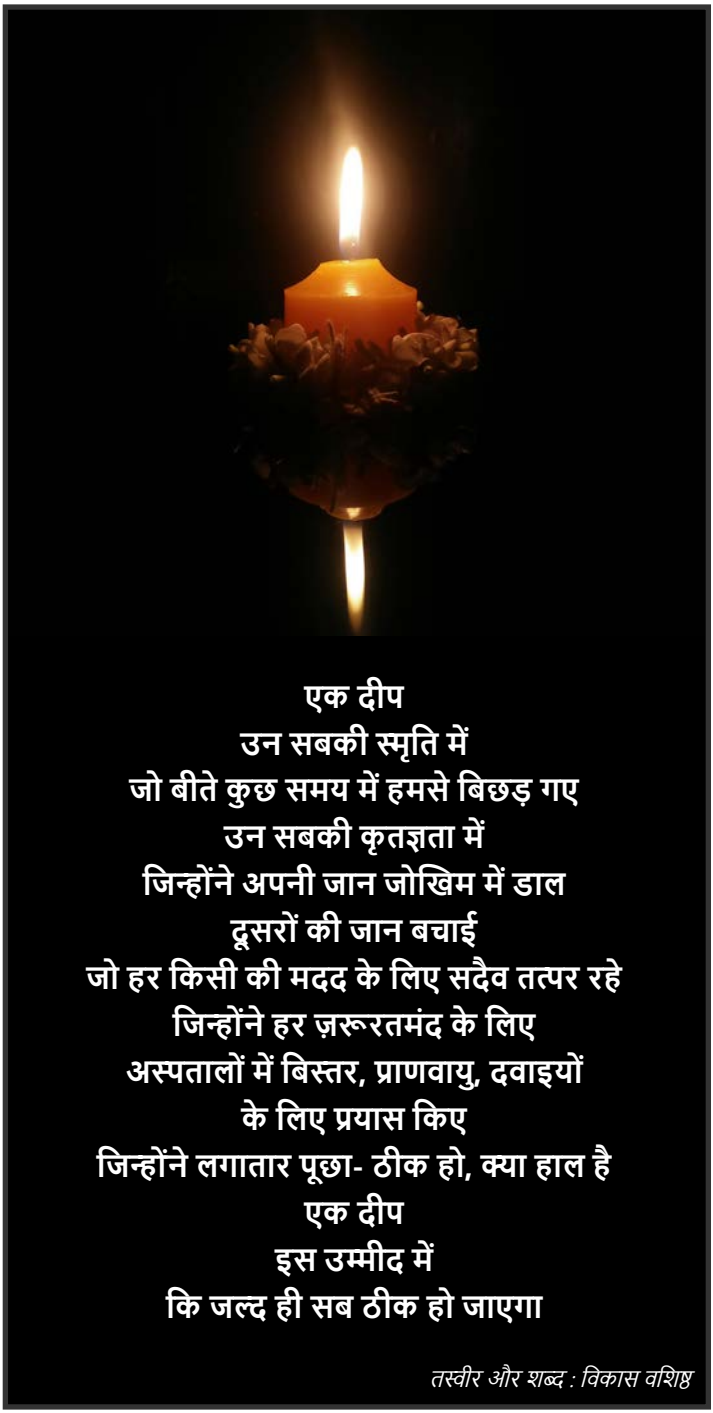

एक दीप
उन सबकी स्मृति में
जो बीते कुछ समय में हमसे बिछड़ गए
उन सबकी कृतज्ञता में
जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल
दूसरों की जान बचाई
जो हर किसी की मदद के लिए सदैव तत्पर रहे
जिन्होंने हर ज़रूरतमंद के लिए
अस्पतालों में बिस्तर, प्राणवायु, दवाइयों
के लिए प्रयास किए
जिन्होंने लगातार पूछा- ठीक हो, क्या हाल है
एक दीप
इस उम्मीद में
कि जल्द ही सब ठीक हो जाएगा

तस्वीर और शब्द : विकास वशिष्ठ

आगे के पृष्ठों पर

04 प्रबंध निदेशक का संदेश

05 उप प्रबंध निदेशक (हर्षा बंगारी) का संदेश

06 उप प्रबंध निदेशक (एन. रमेश) का संदेश

07 प्रकाशकीय

08 पोस्टकार्ड

10 विटामिन हिन्दी

12 काश ये मंज़र इक सपना होता

14 क्रेता ऋणः संभावनाओं की नई राह

16 परियोजना निर्यातः विदेशों में भारत की धमक

18 "मुंबई मेरा तीसरा घर है, तो दिल्ली दूसरा"

21 लघु कथाः आख़िरी काम

23 सीक्रेट डायरीज़

25 एक बैंकर की डायरी

26 शब्दों की आत्मकथाः अनुमोदन

28 निबंधः भारत एक महाशक्ति

32 पारंपरिक परिधान दिवस

33 पुस्तक सार

41 हिन्दी का 'प्रथम स्पर्श'

43 विश्व हिन्दी दिवस

45 मेरी मातृभाषा, मेरा गौरव

48 तू मेरी है प्रेम की भाषा

49 कविताः समय का कालचक्र

50 दिल का दस्तर-ख़्वान बिछाया

51 मैं पुरुष हूं, और मुझे भी रुलाई फूटती है

53 शाम गुलाबी, शहर गुलाबी, पहर गुलाबी

56 जिस्म से रूह में उतर आए तेरा हर अवतार

57 वो हर इक पल का शायर है

प्रबंध निदेशक का संदेश

कैसा संयोग है कि 'एक्ज़िम स्पर्श' अपने दूसरे अंक में प्रवेश कर रही है और मैं भी सेवानिवृत्त होकर जीवन के एक नए पड़ाव की ओर बढ़ रहा हूं। इसका स्पर्श सदैव मन पर अंकित रहेगा। यही भाषा का सौंदर्य है। न केवल हम भाषा से जुड़ते हैं, बल्कि भाषाएं भी हमें जोड़ती हैं।

हाल ही में एक किताब मेरे हाथ लगी। केविन यंग की 'The Art of Losing: Poems of Grief & Healing', पीड़ा और शोक से भरे इन दिनों में यह किताब सकारात्मक ऊर्जा देती है। किताबें ही क्यों, फिल्में, पत्रिकाएं, बातें, गीत, संगीत बहुत कुछ है, जो हमें आशावादी बनाए रखता है।

जब चारों ओर निराशा का माहौल था, मेरी एक्ज़िम टीम आशावाद का दामन थामे, विपरीत परिस्थितियों से लड़ते हुए आगे बढ़ रही थी। और बढ़ रही है। यह समय भी गुज़र जाएगा। जैसा कि मैं पहले भी फ़ैज़ साहब के हवाले से कहता रहा हूं: ***"दिल नाउमीद तो नहीं नाकाम ही तो है, लंबी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है"***

इस शाम के बीतने के साथ ही नया सवेरा आएगा। आज मैं अतीत में झांककर देखता हूं तो जो कुछ दिखाई देता है उसे मैं शायद स्पर्श के अगले अंकों में शेयर करना चाहूंगा। लेकिन मैं यह ज़रूर कहूंगा कि समय के बीतने के साथ मैंने बैंक में व्यवसाय से लेकर भाषा तक को बढ़ते देखा है।

हिन्दी में काम करने के साथ-साथ अपने साथियों को हिन्दी में काम करने का अनुकूल माहौल देना हमारा दायित्व है। आज मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि हिन्दीतर भाषी होते हुए पिछले इन वर्षों में मैंने हिन्दी सीखी और सीखने-सिखाने के इसी क्रम में हिन्दी में काम करने का माहौल बनता गया। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी इस माहौल को इसी तरह बनाए रखेंगे और अपनी मातृभाषाओं को उनका सम्मान ज़रूर देंगे। साथ में एक विदेशी भाषा और हिन्दी के अलावा एक भारतीय भाषा भी ज़रूर सीखेंगे। यदि आप ऐसा कर पाए, तो यह मेरे लिए मेरी सेवानिवृत्ति का सबसे सुंदर उपहार होगा।

शुभकामनाओं सहित,

डेविड रस्कीना
प्रबंध निदेशक

उप प्रबंध निदेशक का संदेश

यह एक्ज़िम स्पर्श का दूसरा अंक है। मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि इसके प्रारंभिक विशेषांक को ख़ूब सराहा गया। ख़ास तौर पर इसके कलेवर, भाषा और अनूठे प्रयोगों को लेकर। इसके लिए मैं टीम स्पर्श को साधुवाद देती हूं।

मैं हिन्दी भाषी हूं और मुझे हिन्दी पढ़ना पसंद भी है। मैंने पहले भी कहा था कि हिन्दी मेरा घर है। और हर कोई अपने घर में अधिक सहज महसूस करता है। आज मेरी जो हिन्दी है, उसमें, बैंक में राजभाषा में होने वाले काम की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वरना आज हमारे इर्द-गिर्द ऐसा माहौल बन गया है कि हमारी अपनी भाषाओं के लिए 'स्पेस' कम होता-सा दिखाई दे रहा है।

यह निश्चित ही चिंता का विषय भी है। आज हमारे चारों ओर जो परिवेश बनता जा रहा है, वह एकाएक नहीं बना है। उसे बनने में कई बरस लगे हैं। अब यदि हमें इस परिवेश में अपनी भारतीय भाषाओं का पूर्ण सम्मान बनाए रखना है, तो हमें अपने इर्द-गिर्द की भाषा पर थोड़ा काम तो करना होगा।

भाषा हमारे इर्द-गिर्द से ही बनती है। ऐसे में ये पत्रिकाएं और इनमें लिखने की बाध्यता कहिए या अवसर, और राजभाषा में काम करने की अनिवार्यता, ये सब मिलकर मुझे अपनी भाषा से जुड़े रहने की वजहें देते हैं। मैं मराठी और हिन्दी बराबर बोल पाती हूं। मराठी का संस्कार मुझे इसी 'इर्द-गिर्द' से मिला है।

जर्मनी के एक दार्शनिक हुए हैं– मार्टिन हाइडेगर। उन्होंने भाषा और संस्कृति के संबंध में लिखा है, "हर भाषा, उन लोगों के इर्द-गिर्द, जो उसे बोलते हैं, एक जादुई घेरा खींच देती है।" और मैं समझती हूं, कि हमें अपने इर्द-गिर्द की भाषा पर निश्चय ही ध्यान देना चाहिए। यह इर्द-गिर्द ही परिवेश का निर्माण करता है। और ये पत्रिकाएं इस परिवेश को बनाने का एक माध्यम होती हैं।

शुभकामनाओं सहित,

हर्षा बंगारी

हर्षा बंगारी

उप प्रबंध निदेशक

उप प्रबंध निदेशक का संदेश

मेरे लिए इस ई-पत्रिका का प्रत्यक्ष रूप से यह प्रथम स्पर्श है। प्रत्यक्ष इसलिए क्योंकि पिछला अंक मैंने केवल देखा भर था और इस अंक के लिए लिखते हुए, इसे आकार लेते देखते हुए प्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़ गया हूं।

इस अंक के साथ हम गत वित्तीय वर्ष को पीछे छोड़ रहे हैं और जब यह अंक आपके हाथों में होगा, हम नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर चुके होंगे। गत वित्तीय वर्ष की अपनी चुनौतियां रहीं। हालांकि इस वित्तीय वर्ष की शुरुआत हम सबके लिए बहुत अच्छी नहीं रही। लेकिन हम जानते हैं कि ज़िंदगी धीरे-धीरे पटरी पर लौट ही आती है।

यह अंक आपके हाथों में है, हम सबने अपने-अपने घरों से दक्षतापूर्वक काम किया है और कर रहे हैं, यह अपने आप में संकेत है कि इस महामारी को हम निश्चित रूप से हरा ही देंगे। यह सब इसे हराने की प्रक्रिया का हिस्सा है। हां, इस बीच हमसे हमारे कुछ अपने ज़रूर बिछड़ गए। परिवारों में निर्वात उत्पन्न हो गया। लेकिन मुझे ऐसे पलों में याद आती है, हरिवंश राय बच्चन की कविता, 'जो बीत गई सो बात गई'। इसकी ये पंक्तियां मुझे बहुत हौसला देती हैं:

अम्बर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहां मिले
पर बोलो टूटे तारों पर,
कब अम्बर शोक मनाता है

मनुष्य की प्रकृति है गतिशील रहना। और मैं समझता हूं कि यही गत्यात्मकता हमारी भाषा में भी बनी रहनी चाहिए। जब कोई भी भाषा अपने नए पाठक और वक्ता वर्ग के बीच जाती है, तो उसमें स्वाभाविक रूप से कुछ परिवर्तन आ ही जाते हैं। ये परिवर्तन भाषा के जीवंत बने रहने के संकेत हैं। आइए, हम एक नई उम्मीद, नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लें और प्रकृति के दिखाए परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ें।

शुभकामनाओं सहित,

एन. रमेश

एन. रमेश

उप प्रबंध निदेशक

एक्ज़िम स्पर्श का यह दूसरा अंक ऐसे समय में आ रहा है, जब हम सब मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी। हम यह भी जानते हैं कि इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं होता। हमारी परेशानियां भी नहीं। यह वक़्त भी टल जाएगा। इस दौरान हम जुड़े रहें, एक-दूसरे की मदद करते रहें, यह सबसे ज़रूरी है।

जैसा कि आप जानते हैं, 'एक्ज़िम स्पर्श' की शुरुआत भी जोड़ने-जुड़ने के इसी क्रम में की गई थी। इसका एक उद्देश्य अपने उन विचारों, अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करना भी है, जिनसे हम प्रेरित होते हैं। यह संयोग ही है कि इस ई-पत्रिका की शुरुआत गत वर्ष ऐसे ही समय में हुई थी, जब सारी दुनिया कोरोना वायरस से जूझ रही थी और आज हम सब दूसरी लहर का सामना कर रहे हैं।

जैसा कि पिछले अंक में कहा गया था कि कोरोना संकट में ई-कंटेंट का प्रचलन तेज़ी से बढ़ा है और यह ई-पत्रिका इंटरनेट पर हिन्दी को बढ़ावा देने के वृहत्तर उद्देश्य में छोटा-सा योगदान है। इसी क्रम में इस अंक में हम बैंक के एक और प्रमुख ऋण कार्यक्रम 'क्रेता ऋण' के बारे में जानकारी साझा कर रहे हैं।

इस अंक में आपको ख़ास तौर पर मिलेगी 'यादों की गुल्लक' की खनक। साथ ही हम कुछ सीक्रेट डायरीज़ लेकर आए हैं। शब्दों की आत्मकथा के रूप में एक नई पहल की है। आपने पिछले अंक को सराहा, हमारा मनोबल बढ़ाया, इससे हमें इस नए अंक के लिए नई ऊर्जा मिली। यह अंक आपको कैसा लगा, शेयर करना मत भूलिएगा। और शेयर करने का ज़रिया कुछ भी हो सकता है, वॉट्सऐप, ईमेल, चिट्ठी... जिसमें भी आप सहज हों।

शुभकामनाओं सहित,

निर्मित वेद
महाप्रबंधक

मन को स्पर्श कर गए, मन के ये बोल

ई-पत्रिका **'एक्ज़िम स्पर्श' सितंबर 2020 का प्रारंभिक विशेषांक** वॉट्सऐप पर मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। आवरण व साज-सज्जा से ही नहीं, अपितु सामग्री की दृष्टि से भी ई-पत्रिका ने मन मोह लिया। सामग्री जानकारीपरक, आकर्षक तथा प्रेरक है। बरबस कविता जैसी कुछ सार-गर्भित पंक्तियां फूट पड़ीं, जिन्हें साझा कर रहा हूं—

'स्पर्श' स्पंदन सहित, गहन ग्राह्य ग्रहित।
सलिला शुभ्रा शोभित, मनभावन, मननीय मोहित।
ऊरध ऊर्ध्व ऊहित, शुभ शुभ सुहित।
नित निकले भाई, वाह बढ़िया बधाई।

ई-पत्रिका नित नवीन ऊंचाइयां प्राप्त करे, ताकि कार्यालयीन हिन्दी की रचनात्मक गतिविधियों से स्टाफ-सदस्यों में प्रेरणा व सतत अभ्यास - पठन, पाठन व लेखन का भाव आता रहे, जिससे कार्यालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बल मिलता रहे। कुछ सुझावः संपादक के नाम का ज़िक्र भी करें तथा इस डिजिटल युग में संपादक का ईमेल पता भी दें और प्रत्येक पृष्ठ पर पत्रिका के नाम के बाद अल्प-विराम लगाकर स्थान का नाम अर्थात नई दिल्ली भी दें।

शुभकामनाओं सहित,

– डॉ. रवीन्द्र प्रसाद सिंह
उप महाप्रबंधक (राजभाषा), आईडीबीआई बैंक लि., दिल्ली अंचल कार्यालय

एक्ज़िम बैंक के दिल्ली के छोटे से कार्यालय का यह सुंदर प्रयास देखकर ख़ुशी हुई। बैंक की ई-पत्रिका 'स्पर्श' का स्पर्श अच्छा लगा। कार्यालय में हुई गतिविधियों का सारा ब्यौरा इसमें मिला। मोबाइल पर पढ़ने में यह सुविधाजनक है, जो इसकी पठनीयता को बढ़ाता है। लॉकडाउन के किस्से बड़े रोचक हैं और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किए गए हैं। पत्रिका का कवेलर आकर्षक है और पाठकों को बांधे रखता है। इसमें एक्ज़िम बैंक के व्यावसायिक उत्पाद की जानकारी भी सरल तरीके से प्रस्तुत की गई है। कुल मिलाकर पत्रिका सुंदर बन पड़ी है। मुझे आशा है कि इसके आगामी अंकों में भी यही स्तर बना रहेगा। शुभकामनाएं।

– श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा
मु.प्र. (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक एवं सह-सचिव, दिल्ली बैंक नराकास

आपकी पत्रिका का अंक बहुत सुंदर है। पत्रिका का संपादन, कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में विषयानुसार रचनाओं का चयन तथा उसकी क्रमबद्धता मन मोह लेती है। लॉकडाउन के संस्मरण, भारतीय अर्थव्यवस्था में बैंकों का योगदान, कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी, हिन्दी तथा अन्य प्रतियोगिताओं का उल्लेख, वेबिनार जो कि एक उत्तम पहल है, कार्यालय तथा बैंक के अन्य अधिकारियों द्वारा लिखे गए लेख सराहनीय हैं। कम शब्दों में कहें तो इस पत्रिका में 'गागर में सागर' समेट लेने का प्रयास किया गया है। पत्रिका के संपादन तथा उसे डिजिटल रूप में उपलब्ध कराने के लिए पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। तथा भविष्य के प्रकाशनों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

– श्री निखिलेश कुमार,
प्रबंधक (राजभाषा अनुभाग), आईआईएफसीएल

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'एक्ज़िम स्पर्श' के सितंबर 2020 का आरंभिक अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका के अवलोकन के पश्चात ऐसा प्रतीत होता है कि इस ई-पत्रिका का डिज़ाइन मोबाइल फोन पर सुगमता से पढ़े जाने की सुविधा के अनुसार बनाया गया है, यही इसकी प्रमुख विशेषता है। हिन्दी दिवस विशेषांक में मुख्य रूप से एक्ज़िम बैंक की संस्कृति और बैंक के एक प्रमुख व्यावसायिक कार्यक्रम की जानकारी साझा की गई है।

वरिष्ठ अधिकारियों के संदेश उत्साहवर्धक हैं। रेडियो मिर्ची की आरजे सायमा के साथ गुफ़्तगू काफ़ी रोचक बन पड़ी है। एक्ज़िम की दुनिया में विभिन्न गतिविधियों का फोटो सहित संकलन बहुत बढ़िया प्रयास है। इसके साथ-साथ नराकास गतिविधियों को भी शामिल किया गया है।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु हार्दिक बधाई कृपया स्वीकार करें एवं आशा करता हूं कि भविष्य में भी यह पत्रिका अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन करती रहेगी।

– श्री संजीव जैन
मु.प्र. (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक एवं सदस्य-सचिव, चंडीगढ़ बैंक नराकास

हिन्दी से है राब्ता

मैं पूर्वोत्तर भारत के एक छोटे-से ग्रामीण इलाके से आती हूं। वहां हिन्दी से मेरा बहुत ज़्यादा सरोकार नहीं रहा। ऐसे में किसी सरकारी संस्था में हिन्दी में काम करना और वह भी देश की राजधानी दिल्ली में, मेरे लिए निश्चित रूप से कठिन था। जब मेरा ट्रांसफर तत्कालीन नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय हो गया, तो बैंक ने मुझे तुरंत ही हिन्दी कक्षाओं के लिए नॉमिनेट कर दिया। मेरा दाखिला 'प्रबोध' में हुआ। मैं बस इतना जानती थी कि यह उन लोगों को हिन्दी सिखाने की भारत सरकार की योजना है, जिन्हें हिन्दी बिल्कुल नहीं आती। मैंने कक्षाएं कीं। दफ़्तर में कुछ लोगों से मदद ली। पढ़ाई की। अभ्यास किया और परीक्षा पास कर ली। मैं ख़ुद भी भरोसा नहीं कर पा रही थी कि मैंने यह परीक्षा पास कर ली है। यह मेरी सबसे बड़ी ख़ुशियों में से एक था।

प्रबोध के बाद मुझे `प्रवीण', 'प्राज्ञ' और 'पारंगत' में नॉमिनेट किया गया। हालांकि ये नाम जितने सुन्दर प्रतीत होते हैं, इनकी परीक्षाएं मेरे लिए उतनी ही कठिन थीं। मैंने इन परीक्षाओं को पास करने में हर उस व्यक्ति से मदद ली, जिससे मुझे मदद मिल सकती थी। यक़ीन कीजिएगा, मैंने इन परीक्षाओं की तैयारी के लिए अपने सहकर्मियों के अलावा ऑफिस के सिक्योरिटी गार्डों से लेकर हाउसकीपिंग वाले साथियों तक से मदद ली है। क्योंकि मेरा हमेशा से मानना रहा है कि हर किसी से सीखा जा सकता है। हिन्दी अधिकारियों से भी अच्छी हिन्दी बोलने वाले मेरे एक बॉस तो यह कहकर मेरा हौसला बढ़ाते रहते थे कि "अचुई! अगर मैं इस परीक्षा में बैठता तो निश्चित रूप से फेल हो जाता।" और फिर राजभाषा समूह तो था ही, जिसने कहीं कोई कसर नहीं रहने दी।

अब बात आ गई कि मैंने पारंगत परीक्षा पास कर ली है। मैं 'क' क्षेत्र में काम करती हूं। इस नाते मुझे अपना शत-प्रतिशत काम हिन्दी में करना है। और मेरा काम क्या है, नोट व वाउचर बनाना। आईओएम तैयार करना। कुछ प्रशासनिक

रिपोर्टें तैयार करना। रजिस्टर में एंट्री करना। लिफाफों पर नाम और पते लिखना। ईमेल करना। विभिन्न प्रकार के पत्र तैयार करना। अब तो व्यक्तिशः आदेश भी मिल गया था कि मुझे अपना सारा काम हिन्दी में ही करना है।

मैंने स्टैंडर्ड फॉर्मैट्स से शुरुआत की। राजभाषा समूह की मदद से ईमेल्स के टेम्प्लेट्स बनाकर रख लिए। नोट हमेशा द्विभाषिक बनाने लगी। माइक्रोसॉफ्ट के ट्रांसलेशन टूल की मदद से। फिर राजभाषा समूह को भेजकर उन्हें एडिट कराती और उसके बाद अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करती। आज मैं हर महीने कई ऐसे ईमेल अपने आप कर लेती हूं, जिसमें मुझे राजभाषा समूह की मदद नहीं लेनी पड़ती। हो सकता है कि वे पूरी तरह ठीक न हों, लेकिन मुझे विश्वास है कि धीरे-धीरे एक दिन वे पूरी तरह भी ठीक हो जाएंगे। मैं समझने लगी हूं कि मशीन ने कहां गलत ट्रांसलेशन किया है। क्योंकि राजभाषा समूह से एडिट कराने के बाद मैं उसे पढ़ती हूं और समझने की कोशिश करती हूं कि गलती कहां हो रही थी।

और मेरे हिन्दी सीख लेने का सबसे बड़ा लाभ मुझे आज समझ आ रहा है, जब मैं अपनी बेटियों को हिन्दी की फाउंडेशन देने में सक्षम हुई हूं। मैंने ख़ुद उन्हें हिन्दी के अक्षर लिखने सिखाए हैं। और यक़ीन मानिए, जब आप किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके अक्षर काग़ज़ पर बनाने लगते हैं, उसी प्रक्रिया में आपको उस भाषा से प्यार हो जाता है। मैं आज हिन्दी में काम केवल इसलिए नहीं करती हूं कि मुझे इसके लिए आदेश मिला है। बल्कि इसलिए करती हूं कि मुझे हिन्दी सीखने के क्रम में हिन्दी से प्यार हो गया है।

मेरी हिन्दी आप में से बहुतों के लिए मनोरंजन जैसी हो सकती है, क्योंकि जब मैं हिन्दी बोलती हूं तो मुझे भी वह मनोरंजन ही लगता है। क्योंकि मेरा उच्चारण आज भी अपनी मातृभाषा में ही जाता है। लेकिन मैंने भी ठानी हुई है, मैं छोड़ूंगी नहीं। निरंतर प्रयास करती रहूंगी।

और आखिर में, यह जो मैंने लिखा है, वह निश्चित रूप से राजभाषा समूह से ठीक होकर आया है। वरना मैं आज भी इतना शुद्ध नहीं लिख पाती हूं कि बिना राजभाषा समूह की मदद के उसे प्रकाशन के लिए भेज सकूं।

अचुई तुंगशांगनाव
प्रशासनिक प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

काश ये मंज़र इक सपना होता या होता इतिहास

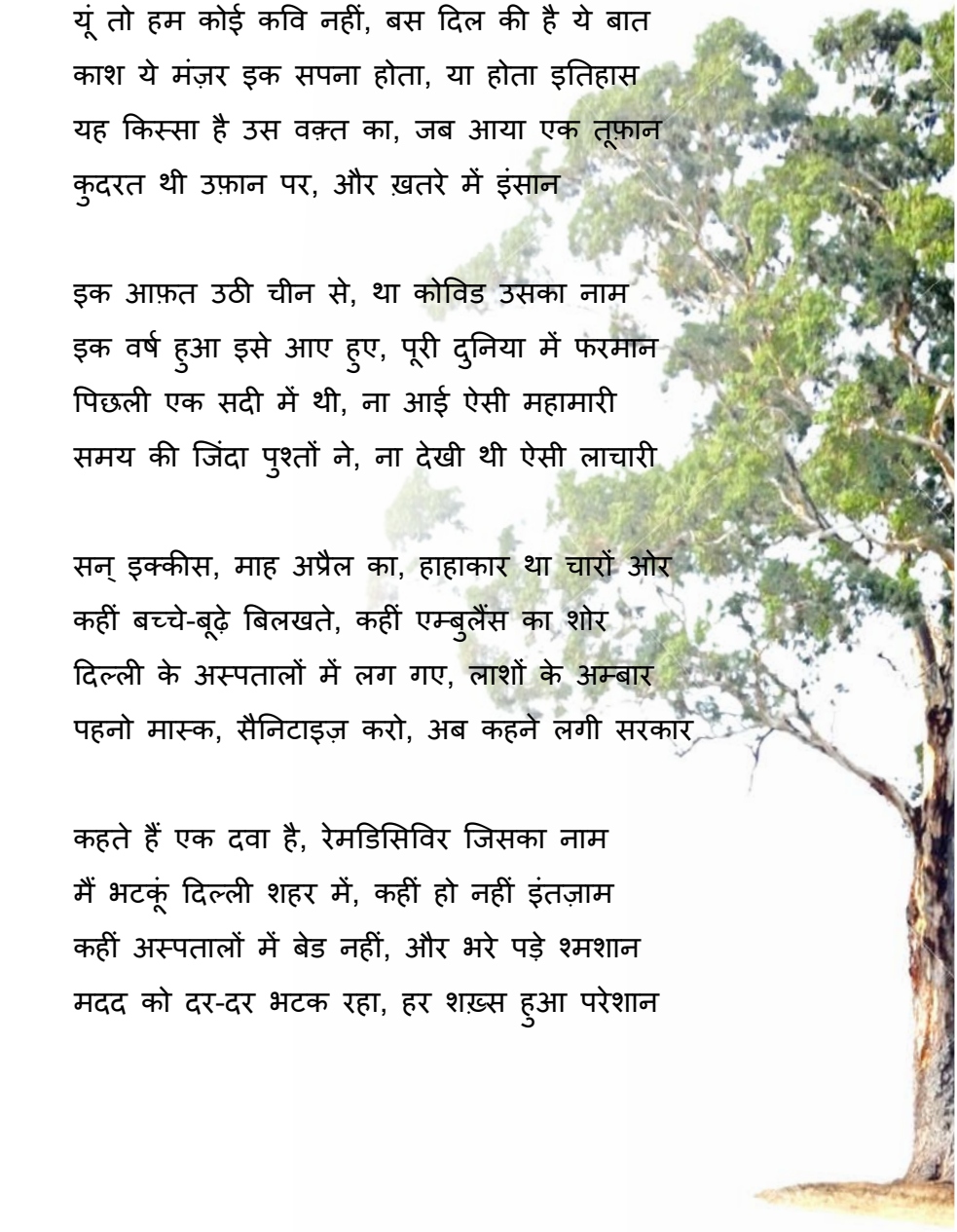

यूं तो हम कोई कवि नहीं, बस दिल की है ये बात
काश ये मंज़र इक सपना होता, या होता इतिहास
यह किस्सा है उस वक़्त का, जब आया एक तूफ़ान
कुदरत थी उफ़ान पर, और ख़तरे में इंसान

इक आफ़त उठी चीन से, था कोविड उसका नाम
इक वर्ष हुआ इसे आए हुए, पूरी दुनिया में फरमान
पिछली एक सदी में थी, ना आई ऐसी महामारी
समय की जिंदा पुश्तों ने, ना देखी थी ऐसी लाचारी

सन् इक्कीस, माह अप्रैल का, हाहाकार था चारों ओर
कहीं बच्चे-बूढ़े बिलखते, कहीं एम्बुलैंस का शोर
दिल्ली के अस्पतालों में लग गए, लाशों के अम्बार
पहनो मास्क, सैनिटाइज़ करो, अब कहने लगी सरकार

कहते हैं एक दवा है, रेमडिसिविर जिसका नाम
मैं भटकूं दिल्ली शहर में, कहीं हो नहीं इंतज़ाम
कहीं अस्पतालों में बेड नहीं, और भरे पड़े श्मशान
मदद को दर-दर भटक रहा, हर शख़्स हुआ परेशान

न दवा लगे न दुआ लगे, बिन वायु तड़पे प्राण
मुझे समझ न आए ऐ ख़ुदा, किंज सांसें करूं आसान
कुछ ख़ुद ही उठ कर चल दिए, डाल जोखिम में अपनी जान
था मौत का मंज़र देखना, हरगिज़ नहीं आसान

कहीं जान थी मां की कोख में, कहीं बूढ़ी मां लाचार
कुछ परिवारों में हो गया था, हर व्यक्ति बीमार
ये बात है हर परिवार की, कहने वाले हैं गुमनाम
"ख़ुदा बख़्श मेरे परिवार को, और ले ले मेरी जान"

हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, अमीर, गरीब, किसान
कोविड ने सब आम-ओ-ख़ास को कर दिया एक समान
डॉक्टर, नर्स, स्टाफ को है, कोटि-कोटि प्रणाम
मानवता पर रहेगा, इन लोगों का अहसान

कुछ कहते ये शुरुआत है, शायद लंबी रात हो
गर फिर भी हम न संभल सके, न जाने कब प्रभात हो
मत प्रकृति से खिलवाड़ कर, ओ "सभ्य संपन्न" इंसान
अभी मौका है उठ जाग जा, तेरी बेशक़ीमती जान!!!
तेरी बेशक़ीमती जान!!

अशोक कुमार वर्तिया
उप महाप्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

क्रेता ऋण: संभावनाओं के विस्तार की नई राह

- विदेशी खरीदारों को भारत से माल आयात करने के लिए आसान कर्ज
- भारतीय लघु और मध्यम उद्यमों से भी निर्यात को सुगम बनाने वाला कार्यक्रम

किसी भी देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में उसके निर्यातों का बड़ा महत्त्व होता है। इसलिए देश से निर्यातों और विशेष रूप से परियोजना निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए बैंक का एक विशिष्ट कार्यक्रम है- क्रेता ऋण। बैंक, भारत सरकार के राष्ट्रीय निर्यात बीमा खाते के अंतर्गत क्रेता ऋण प्रदान करता है।

भारतीय निर्यातकों के लिए विदेशी बाज़ारों में अवसरों पर वेबिनार

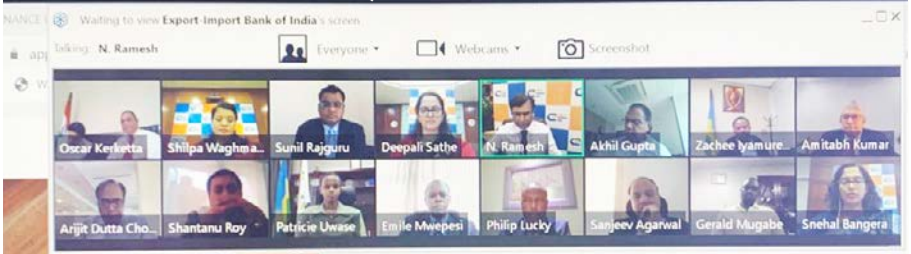

रवांडा में बुनियादी ढांचागत विकास के क्षेत्र में अवसरों पर चर्चा

इंडिया एक्ज़िम बैंक उभरते बाज़ारों तक पहुंच बनाए रखने के लिए लगातार प्रयासरत रहता है और इन बाज़ारों में उपलब्ध अवसरों की जानकारी भारतीय निर्यातकों तक पहुंचाता है। इसी क्रम में बैंक ने 12 फरवरी, 2021 को एक वेबिनार किया। इसमें रवांडा में बुनियादी ढांचागत विकास के लिए अवसरों पर बात की गई, जिसमें रवांडा के विभिन्न मंत्रालयों और भारतीय परियोजना निर्यातकों के प्रतिनिधि शामिल रहे।

क्रेता ऋण : क्या

क्रेता ऋण यानी विदेशी खरीदारों के लिए कर्ज। इसके ज़रिए विदेशी खरीदार भारतीय निर्यातक के पक्ष में साखपत्र (एलसी) खोल सकते हैं और भारत से माल एवं सेवाएं आस्थगित भुगतान शर्तों (भुगतान के लिए निश्चित समय सीमा) पर आयात कर सकते हैं। यह साखपत्र एक तरह की गारंटी है कि खरीदार ने कोई चूक की भी तो निर्यातक को उसका पैसा बैंक देगा।

क्यों

भारत से परियोजना निर्यातों, ख़ासकर बुनियादी ढांचागत क्षेत्र में परियोजना निर्यातों को बढ़ावा देने के लिए एक्ज़िम बैंक ने ईसीजीसी लिमिटेड के सहयोग से अप्रैल 2011 में भारत सरकार के राष्ट्रीय निर्यात बीमा खाते के अंतर्गत क्रेता ऋण (बीसी-एनईआईए) नाम का यह कार्यक्रम शुरू किया। इसके अंतर्गत बैंक भारत से परियोजना निर्यातों को वित्तपोषित करता है तथा उन्हें सुगम बनाता है।

भारत को लाभ

चूंकि यह ऋण भारत से परियोजना निर्यात माल को आयात करने के लिए दिया जाता है, इसलिए यह देश से निर्यातों को बढ़ाने में सहायक है। इससे विदेशों में बड़ी परियोजनाएं लगाने में भारत और भारतीय कंपनियों की प्रतिष्ठा बढ़ती है। इसके ज़रिए भारत उधारकर्ता विकासशील और अल्प विकसित देशों में बुनियादी ढांचागत विकास और सामाजिक-आर्थिक विकास में भी अहम भूमिका निभाता है।

निर्यातकों को लाभ

निर्यातकों को मुख्य रूप से दो फायदे हैं। एक, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में लेन-देन के लिए उसकी ट्रांज़ैक्शन लागत घटती है। दूसरा, भारतीय निर्यातक को अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में प्रतिस्पर्द्धा का मौका मिलता है और वह अपनी कार्यशील पूंजी (वर्किंग कैपिटल) का सदुपयोग कर पाता है। इस क्रेता ऋण का इस्तेमाल केवल भारतीय माल और सेवाओं के निर्यात के लिए ही किया जा सकता है।

विदेशी क्रेताओं को लाभ

विदेशी खरीदारों को भी मुख्य रूप से दो लाभ हैं। एक, परियोजनाओं के सुचारू क्रियान्वयन के लिए उन्हें मध्यम और लंबी अवधि की वित्तपोषण सुविधाएं मिल जाती हैं। और दूसरा, जिस देश में परियोजना लगाई जानी है, उस देश में मिलने वाले ऋण की ऊंची ब्याज दरों के मुकाबले उन्हें प्रतिस्पर्द्धी और आकर्षक ब्याज दरों पर यह क्रेता ऋण मिल जाता है।

परियोजना निर्यातः विदेशों में भारत की धमक

भारत के निर्यात पोर्टफोलियो में परियोजना निर्यातों का अहम स्थान है। हाल के कुछ वर्षों में विदेशों में भारतीय परियोजना निर्यातकों ने विभिन्न प्रकार के कॉन्ट्रैक्ट हासिल किए हैं। यह भारतीय परियोजना निर्यातकों की तकनीकी दक्षता और उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है। परियोजना निर्यातों को मुख्य रूप से 4 श्रेणियों में बांटा गया हैः

सिविल निर्माणः

बुनियादी ढांचे से जुड़े निर्माण सिविल निर्माण कहलाते हैं। चाहे वह परियोजना जल से जुड़ी हो या सड़क या परिवहन या भवन निर्माण से। निर्माण परियोजनाओं में सिविल कार्य, स्टील का संरचनात्मक कार्य, उपयोगी उपकरण की स्थापना तथा बांधों, पुलों, हवाईअड्डों, रेलवे लाइनों, सड़कों, अंपार्टमेंट, ऑफिस कॉम्प्लेक्स, अस्पतालों, होटलों आदि का निर्माण शामिल है।

टर्नकी परियोजनाएं:

इनमें उपकरणों के साथ-साथ संबंधित सेवाओं की आपूर्ति तथा परियोजनाओं की संकल्पना से लेकर उन्हें चालू करने तक की गतिविधियां शामिल हैं। इनमें बॉयलरों की आपूर्ति, बिजली संयंत्रों, ट्रांसमिशन लाइनों, सब-स्टेशनों की स्थापना और उन्हें चालू कराने सहित सीमेंट, चीनी, टेक्सटाइल, रसायनों और डिसैलिनेशन संयंत्रों की स्थापना कराने जैसी परियोजनाएं शामिल हैं।

परामर्शी सेवाएं:

सेवा कॉन्ट्रैक्टों के तहत तकनीकी जानकारी, कौशल, कार्मिक तथा प्रशिक्षण एवं परिचालन और रखरखाव सेवाओं को परामर्शी परियोजनाओं की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। परियोजना निष्पादन सेवाएं, औद्योगिक संयंत्र के लिए प्रबंधन कॉन्ट्रैक्ट, अस्पताल, होटल, तेल खनन, रिग्स एवं लोकोमोटिव किराये पर लेना, संयंत्र स्थापित करने संबंधी निरीक्षण तथा आईटी सॉल्यूशन और सिस्टम्स सेवा कॉन्ट्रैक्टों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।

आपूर्तिः आपूर्ति कॉन्ट्रैक्टों में प्रमुख रूप से पूंजीगत माल का निर्यात और औद्योगिक विनिर्माण शामिल हैं। आपूर्ति कॉन्ट्रैक्टों के प्रमुख उदाहरण हैं: स्टेनलेस स्टील स्लैब तथा फेरो-क्रोम मैन्युफैक्चरिंग उपकरण, डीजल जनरेटर, पंप, कंप्रेशर और वाहनों की आपूर्ति।

विदेशी खरीदार कौनः विदेशी सरकारें और उनके स्वामित्व वाली संस्थाएं। यह सुविधा विदेशी सरकारों की संप्रभु गारंटी के ज़रिए प्रदान की जाती है। एनईआईए, ईसीजीसी के ज़रिए ऋण सुविधा के लिए बीमा कवर देता है। यह ऋण सुविधा ईसीजीसी द्वारा चिह्नित देशों की सकारात्मक सूची (पॉज़िटिव लिस्ट) में उल्लिखित देशों के लिए ही होती है।

ऐसे मिलता है बीमा कवरः भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग की एक निदेश समिति (सीओडी) होती है। एनईआईए के अंतर्गत निर्यात ऋण बीमा कवर के लिए परियोजना को इसी समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। यह समिति परियोजना पर विचार कर बीमा कवर के लिए अनुमोदन देती है।

ऋण राशिः ऋण राशि सामान्यतया कॉन्ट्रैक्ट के मूल्य की 85% से ज़्यादा नहीं होती है। इससे अधिक के ऋण के लिए सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से मामलेवार आधार पर विचार किया जा सकता है।

ब्याज दर और अवधिः ब्याज दर इंडिया एक्ज़िम बैंक के कॉस्ट ऑफ फंड्स प्लस स्प्रैड पर आधारित होती है। ऋण अवधि सामान्यतया 8 से 20 वर्ष होती है। बैंक, विदेशी टर्नकी परियोजनाओं, सिविल विनिर्माण कॉन्ट्रैक्टों, आपूर्ति तथा तकनीकी एवं परामर्शी सेवा कॉन्ट्रैक्टों के लिए निधिक और गैर निधिक सुविधाएं प्रदान करता है।

इसके लिए भी ऋणः बैंक, पूंजीगत माल, संयंत्र और मशीनरी, औद्योगिक उत्पादों, टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं (कंज्यूमर ड्यूरेबल्स) तथा भारत सरकार की विदेश व्यापार नीति के अंतर्गत निर्यात के लिए निर्धारित अन्य वस्तुओं के निर्यातों के वित्तपोषण के लिए विदेशी उधारकर्ता को एनईआईए कवर के बिना भी मध्यम अवधि के लिए क्रेता ऋण प्रदान करता है।

यह तस्वीर लुसाका की है। बैंक ने ज़ाम्बिया सरकार को सड़क परियोजना के लिए 245.75 मिलियन यूएस डॉलर का क्रेता ऋण प्रदान किया था, जिससे आज वहां परिवहन सुगम हुआ है।

मुंबई मेरा दूसरा घर है, तो दिल्ली तीसरा

ज़िंदगी के कई साल मुंबई में बीते। पर जब दिल्ली आया तो यहीं का होकर रह गया। दिल्ली में बड़ा प्यार मिला। सबसे। हर एक ऑफिसर से। और दिल्ली ऑफिस मेरा तीसरा घर हो गया। क्योंकि दूसरा घर तो मुंबई ऑफिस है ही। घर क्या है? जहां अपने हैं, प्यार है, वही तो घर है। घर में कभी-कभी तक़रार भी हो जाती है। लेकिन तक़रार में भी प्यार होता है। इसीलिए वह अगले ही पल ख़त्म हो जाती है। दिल्ली ख़ास है। दिल्ली से एक ख़ास रिश्ता है। मैं शुरू से ही दिल्ली से जुड़ा रहा।

दिल्ली ऑफिस का एम्बीएंस, आर्किटेक्चर शुरू से ही वेलकमिंग और वॉर्म्थ वाला रहा। चाहे वो एलआईसी बिल्डिंग में हो, स्टेट्समैन हाउस में हो या फिर अब किदवई नगर में। स्टेट्समैन हाउस वाले ऑफिस में तो मैंने और प्रवीण ने बहुत काम करवाया था। We did a wonderful job. कितना अच्छा बन पड़ा था वो। और यहां किदवई नगर में देखोगे तो यहां भी कहीं न कहीं आपको मेरी छाप दिख जाएगी। यहां मैंने चेंज के लिए कुछ एक्सपेरिमेंट भी किए। Because change is the only constant. 'बदलाव' ज़िंदगी को सही मायने में ज़िंदगी बनाते हैं। किदवई नगर प्रिमाइसेज़ में मैंने कई बदलाव किए। शायद इसीलिए दिल्ली ऑफिस के दर-ओ-दीवार हर किसी के लिए

उतने ही ख़ुशमिज़ाज हैं जितना कि मेरे लिए। इस काम में मुझे सबकी मदद मिली। ख़ास तौर पर दीवारों को एक अलग कलेवर देने के काम में अर्चना ने मेरी काफ़ी मदद की। हमने ऑफिस के हर कोने को कस्टमाइज़्ड कलाओं और शिल्पकृतियों से सजाया। एक-एक पेंटिंग बोलती नज़र आती है। फिर वह चाहे मिलियन डॉलर स्माइल हो या मिट्टी के आंगन में सूखती मिर्ची और पुराने किवाड़ों वाली पेंटिंग। इनसे आज हर दीवार मुझे बोलती नज़र आती है। आपको भी लगती होगी।

दिल्ली ऑफिस के आर्किटेक्चरल एम्बीएंस के साथ-साथ यहां का सोशल एम्बीएंस भी हमेशा से हेल्पफुल और फ्रेंडली रहा। शायद इसीलिए, क्योंकि दिल्ली दिलवालों की है। (हंसते हुए)। शीरीं ज़ुबानी यहां की ख़ासियत है। दरअसल, दिल्ली ऑफिस का अपना एक कल्चर रहा है। मिस्टर रामन, मिस्टर श्रीधर, मिस्टर राव से लेकर मिस्टर त्रिखा, श्रीराम और तरुण सबने इस कल्चर को आगे बढ़ाया। यहां के शीर्ष प्रबंधन में अब तीन लोग हैं। मैं इन तीनों से, यहां के हर ऑफिसर से, यही कहना चाहता हूं कि इस एम्बीएंस को बनाए रखें। मेरी शुभकामनाएं आप सबके साथ हैं।

मैं इन ऑफिसर्स से एक बात और कहना चाहता हूं कि मूवमेंट को लेकर फ्लेक्सिबल रहें। मुझे आज भी याद है, जब मुझसे

हर कोना कुछ कहता है

हर कोना कुछ कहता है

अचानक कहा गया कि तुमको अपनी टीम के साथ दिल्ली जाना है। मैं फ्लेक्सिबल रहा। अपनी टीम को लेकर दिल्ली आ गया। मैंने तो दिल्ली ऑफिस के परिवार को अपनी आंखों के सामने बढ़ते देखा है। मैंने बहुत से बदलाव देखे हैं। इन सब बदलावों के बीच मैं उनका शुक्रिया भी अदा करना चाहता हूं, जिन्होंने यहां आने वाले हर नए व्यक्ति का हर कदम पर साथ दिया। वे शुरू से यहीं रहे और यहां रहते हुए सबके काम को आसान बनाते रहे। उन्हें गति देते रहे।

हमारी हमेशा कोशिश रही है कि दिल्ली ऑफिस में हर साथी हमेशा ख़ुशी से काम करें और अपने आसपास के माहौल को भी ख़ुशमिज़ाज बनाए रखें। मैं अपना तीसरा घर आपके पास छोड़कर जा रहा हूं, इस उम्मीद और भरोसे के साथ कि यहां आप हमेशा खुशहाली और पॉज़िटिविटी बनाए रखेंगे। ख़ुश रहिए...। चलो...!

नदीम पंजेतन
पूर्व मुख्य महाप्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

आख़िरी काम

एक बूढ़ा नाविक नदी किनारे नावें बनाने और लोगों को दूसरे किनारे छोड़ने का काम करता था। उसकी बनाई नावों की प्रसिद्धि दूर-दूर तक थी। अब चूंकि वह बूढ़ा हो रहा था, तो उसके मन में एक विचार आया। उसने सोचा कि क्यों न बाकी की ज़िंदगी आराम से गुज़ारी जाए। इसी विचार से उसने एक राहगीर को नदी पार ले जाने के लिए अपनी नाव में बैठा लिया। "कल से मैं ये काम छोड़ दूंगा। अब काफ़ी बूढ़ा हो गया हूं। ज़िंदगी भर आराम नहीं किया। अब तो सोचता हूं कि बस एक नाव लेकर निकल पड़ूं, कहीं दूर, एकान्त में, किसी ऐसी जगह जहां ज़िंदगी की कठिनाइयां न हों।"

राहगीर ने नाविक को बड़बड़ाते हुए सुना और कहा कि सब आपकी नावों की प्रशंसा करते हैं। यदि आप मेरे लिए एक आख़िरी नाव बना देंगे तो आपका बड़ा उपकार होगा।

"आप यहां के सबसे अनुभवी व्यक्ति हैं। आपकी कमी यहां कोई नहीं पूरी कर पाएगा, लेकिन मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जाने से पहले मेरा आख़िरी काम करते जाइए।" राहगीर ने कहा।

नाविक को कुछ समझ नहीं आया, फिर भी उसने कहा- "क्यों नहीं? "

इस तरह नाविक एक आख़िरी नाव बनाने के लिए तैयार हो गया। पर यह जानकर कि यह आख़िरी काम है और इसके बाद उसे कुछ नहीं करना होगा, वह थोड़ा ढीला पड़ गया। पहले वहां वह बड़ी सावधानी से नाव बनाता था। अब बस काम चलाऊ तरीके से जल्दी-जल्दी नाव बनाने लगा। नाव कुछ दिनों में ही तैयार हो गई। जब पहले से निर्धारित समय पर राहगीर आया तो देखा नाव तो पहले से ही तैयार थी, नाविक तो अपना बोरी बिस्तर बांधने में व्यस्त था। राहगीर को देखते ही वह बोला- "अच्छा हुआ आप आ गए, मैंने नाव तैयार कर दी है। अब मैं चलता हूं, लम्बा सफ़र तय करना है।"

राहगीर बोला- "हां, आप बिल्कुल जा सकते हैं, लेकिन आज आपको अपनी बनाई इस नाव में ही जाना पड़ेगा। यह मेरी तरफ़ से आपको एक तोहफ़ा समझिए। आपकी नाव की कीमत मैं अदा कर देता हूं।"

नाविक यह सुनकर स्तब्ध रह गया, वह मन ही मन सोचने लगा। कहां मैंने दूसरों के लिए एक से बढ़कर एक नाव बनाई और अपनी नाव को ही इतने घटिया तरीके से बना बैठा। काश! मैंने मेरी नाव भी बाकी नावों की तरह बनाई होती।

अपने सामर्थ्य से अच्छा हो हर काम

मित्रों! आपका कौनसा काम, कब आपको प्रभावित कर सकता है, यह अनुमान लगा पाना बहुत मुश्किल है। यह समझने की ज़रूरत है कि हमारा काम हमारी पहचान बना सकता है और बिगाड़ भी सकता है, इसलिए जो भी काम किया जाए, अपने सामर्थ्य से अच्छा किया जाए। चाहे वह काम आख़िरी ही क्यों न हो?

सागर वर्मा
प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

डायरियां प्रायः सीक्रेट और हमारी राज़दार होती हैं। जो बातें हम किसी से नहीं कर सकते, वो डायरी से करते हैं। डायरी हमारे एहसासों की ही सदूंक नहीं होती, बल्कि दिल के संदूक के ताले की चाभी भी होती है। आपको याद होंगी वो तमाम डायरियां, जिनमें हम कभी ताले लगाकर रखते थे। केवल इसलिए कि कोई उन्हें पढ़ न ले। यहां सीक्रेट डायरीज़ आपको अपने ऐसे ही दौर में लेकर जाएंगी, जहां जीवन के किसी न किसी मोड़ पर संभवतः आप भी रहे होंगे।

अब चूंकि इस स्तम्भ का नाम ही सीक्रेट डायरीज़ है, इसलिए इस डायरी की तस्वीरें क्लिक करने वाले और ये डायरी लिखने वाले, दोनों ही नाम गोपनीय रखे गए हैं।

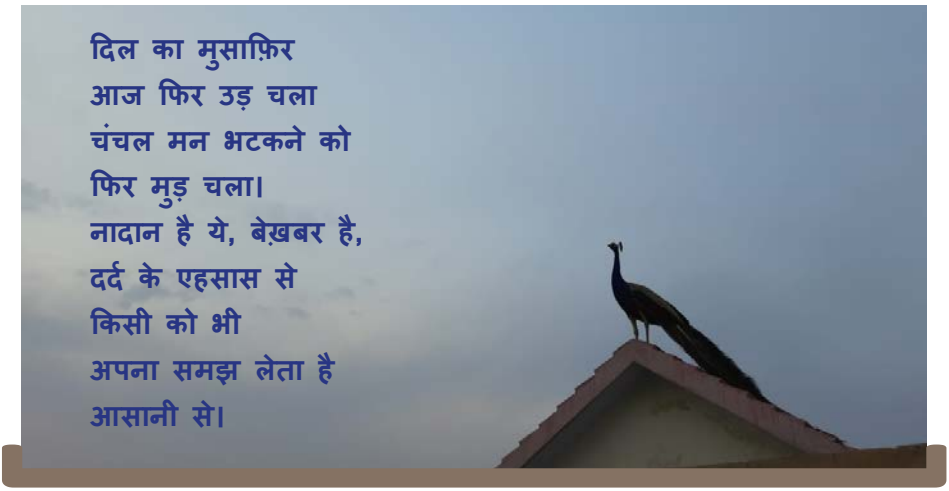

अनजानी राहों की तलाश में जुटी हूं, अनदेखे चेहरों को पढ़ने में लगी हूं।
बचपन के साज़ पर उंगलियां रखती हूं, अनसुनी धुनों को गुनगुनाने लगती हूं।

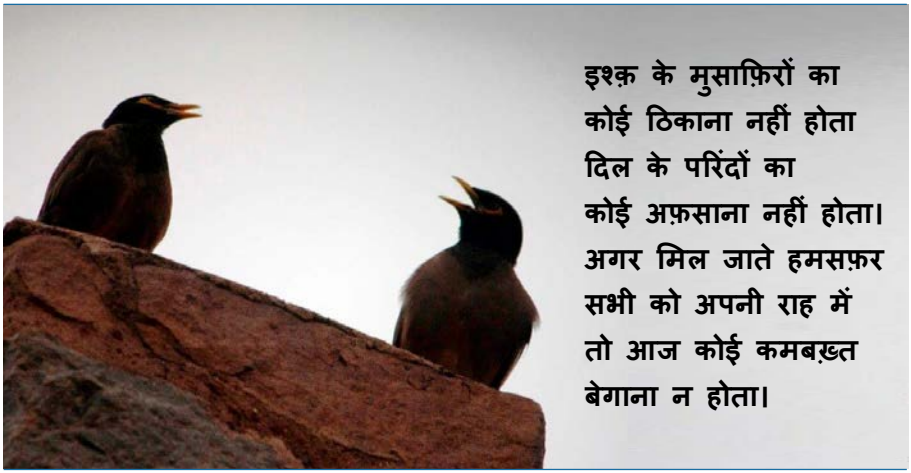

इश्क़ के मुसाफ़िरों का
कोई ठिकाना नहीं होता
दिल के परिंदों का
कोई अफ़साना नहीं होता।
अगर मिल जाते हमसफ़र
सभी को अपनी राह में
तो आज कोई कमबख़्त
बेगाना न होता।

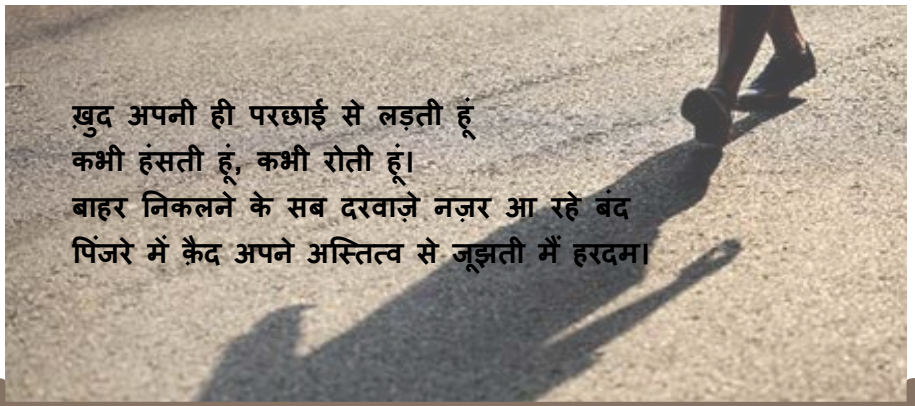

ख़ुद अपनी ही परछाई से लड़ती हूं
कभी हंसती हूं, कभी रोती हूं।
बाहर निकलने के सब दरवाज़े नज़र आ रहे बंद
पिंजरे में क़ैद अपने अस्तित्व से जूझती मैं हरदम।

एक बैंकर की डायरी

दफ़्तर में बैठा हूं। रात के साढ़े नौ बजे हैं। काम है। पर काम करने का मन नहीं है। कुछ नहीं कर पा रहा हूं। न काम और न ही काम के साथ न्याय। इसलिए काम को फ़िलहाल रोक दिया है। इससे पहले करीब आधे घंटे तक बस यूं ही बैठा रहा। गर्दन को बाएं घुमाता हूं और एक कुर्सी दिखाई देती है। इस वक़्त कुर्सी का मुंह दाहिनी ओर है। ठीक वैसा ही, जैसा उस कुर्सी से किसी के उठकर वहां से बाहर निकलते समय हो जाता है। पहले कभी नहीं रहा ऐसे। कुर्सी हमेशा मेज़ को ही ताकती थी। जैसे अगली सुबह का इंतज़ार कर रही हो। लेकिन आज, जैसे जाने वाले को ताक रही है। उसे अनमने ढंग से अलविदा कह रही है।

समय कितना जल्दी सब बदल देता है। लेकिन कुछ बदलावों को आत्मसात करने में हमें बहुत समय लग जाता है। रह-रहकर मेरी आंख भर आती है। मैं नहीं जानता कि मैं ये बातें क्यों लिख रहा हूं। शायद इसलिए कि लिख लेने से मन हल्का हो जाता है मेरा। कैसी विचित्र स्थिति है। सामने काम पड़ा है। मेज़ पर कुछ काग़ज़ बिखरे हैं। 'एक चुप्पे शख़्स की डायरी' रखी है। वाजपेयी हैं। इसे जब-जब छूता हूं, आपको सामने पाता हूं। इस वक़्त आजू-बाजू में कोई नहीं है। बस एक गीत की धुन मेरे कानों में लगातार गूंज रही है। जैसे कोई गीत यहीं मेरे आसपास गुनगुनाया जा रहा है। मैं नज़र उठाकर देखता हूं कि सब चले गए हैं। लौट गए हैं। अपने-अपने घरों को। कुछ अपनी नई मंज़िलों को। अब यहां कोई नहीं है। बस एक ख़ालीपन है।

रोज़ाना इसी ख़ालीपन के साथ लौटता हूं। घर भी। और फिर अगली सुबह दफ़्तर भी। लेकिन ये ख़ालीपन नहीं भरता। उसी को भरने की कोशिश करता हूं। इन शब्दों से। और कभी-कभी ख़ुद से बातें करके। लेकिन कभी-कभी दो बातों के बीच भी इतना ख़ाली स्थान होता है कि उसमें एक लम्बी कहानी समा सकती है। कौन जाने कि इन शब्दों के बीच कितनी कहानियां, कितनी यादें समायी हैं। कभी-कभी ये भी महसूस होता है कि कहीं पूरा जीवन ही इस ख़ालीपन में न समा जाए।

10 फरवरी, 2021, रात 10 बजे

कामकाजी भाषा में सहर्ष स्वीकृति : अनुमोदन

इस अंक से हमने 'शब्दों की आत्मकथा' का यह नया स्तम्भ शुरू किया है। इसमें हम दैनिक कामकाज में प्रायः इस्तेमाल होने वाले कुछ शब्दों की चर्चा करेंगे। इसकी शुरुआत अनुमोदन से की जा रही है, जो सरकारी कामकाज का सबसे ज़रूरी और महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी अपनी एक प्रक्रिया है। वह प्रक्रिया तो हम जानते हैं। लेकिन इस शब्द के बनने और इसमें बसने वाले अर्थ को ग्रहण करने की भी एक प्रक्रिया है। यदि आपके भी मन में हो कोई शब्द, जिस पर आप चर्चा करना चाहें या पढ़ना चाहें, तो टीम स्पर्श को ज़रूर लिख भेजें... तब तक पढ़िए 'अनुमोदन' की 'आत्मकथा':

मेरे मूल में ही प्रसन्नताः

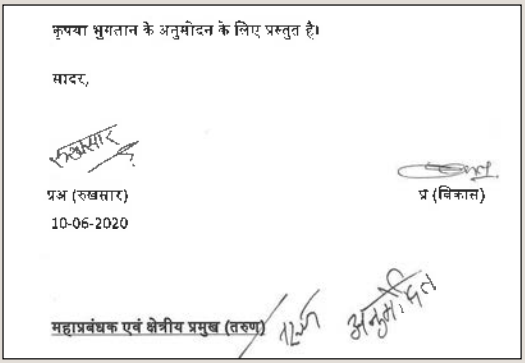
कृपया भुगतान के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।

सादर,

प्रअ (रुखसार)
10-06-2020

प्र (विक्रांत)

महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख (तरुण)

मैं अनुमोदन हूं। मेरी दरकार हमेशा रहती है। सरकारी कामकाज में सबसे ज़्यादा। सबको मालूम है, मेरे बिना व्यवस्था में एक पत्ता इधर से उधर नहीं हिल सकता। मुझसे ही पूरी व्यवस्था चलती है। मुझे लिया और दिया जाता है। मैं शीर्ष पर विराजता हूं, पर विनम्र इतना हूं कि पन्नों पर हमेशा नीचे की ओर बैठता हूं।

मेरे मूल में संस्कृत की मुद् धातु है। मुद् धातु में प्रसन्नता और हर्ष का भाव है। मुद् से ही बना है मोदन। मोदन का अर्थ हंसी से है। मोदन में 'अनु' उपसर्ग के मिलने से मैं बनता हूं- अनुमोदन। और मेरा अर्थ विस्तार हो जाता है। हंसी के मूल में भी प्रसन्नता का ही भाव है। हम तभी हंस पाते हैं, जब हम भीतर से प्रसन्न होते हैं। यदि भीतर से दुखी हैं, खिन्न हैं, तो बात भले ही कितनी भी मज़ेदार क्यों न हो, हमें हंसी नहीं आती है।

अनुगमन मेरी प्रकृतिः

'अनु' उपसर्ग की ख़ासियत यह है कि यह जिस भी शब्द के साथ लगता है, उसमें अनुगमन, अनुसरण, अनुरूप, अनुशीलन जैसे भाव आ जाते हैं। इसीलिए मुद् के साथ मिलकर यह मुझमें प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति के भाव भर देता है। जो कहा गया है, यदि वह अनुमोदित हो जाए तो उसे अनुमोदित करने वाला उस कहे गए की पुष्टि करता है। इस प्रकार, यह मुझमें भी अनुगमन का भाव भरता है। मैं उत्पत्ति मूलक नहीं हूं। जो पहले प्रस्तुत किया जाए, मैं उसी पर विराज सकता हूं।

मैं मंज़ूरी से अलग हूंः

मेरे ही भाव से मिलता-जुलता एक शब्द है- मंज़ूरी। मंज़ूरी में भी स्वीकृति का भाव है। लेकिन मुझमें (अनुमोदन में) सहर्ष स्वीकृति का भाव है। क्योंकि मेरे मूल में मुद् जैसा सुंदर पद बसता है। इसीलिए जब किसी काम के लिए मैं दिया जा रहा होता हूं, तो उस समय, मुझे देने वाले और लेने वाले, दोनों के चेहरों पर प्रसन्नता के भाव उमड़ आते हैं।

मेरे मूल में कल्याण का भी भाव है। मैं कल्याणकारी हूं। अनुमोदन कल्याणकारी कार्यों के लिए ही दिया जाता है। भले ही वह व्यक्तिगत कल्याण के लिए हो या सामाजिक। मैं मंज़ूरी से अधिक औपचारिक हूं। इसीलिए सरकारी कामों में मेरा उपयोग किया जाता है।

सरकारी कामकाज में मंज़ूरी को अंग्रेज़ी में Sanction कहते हैं और Sanction तो प्रतिबंध भी हो सकता है। लेकिन मेरा (अनुमोदन) का ऐसा कोई विपरीत अर्थ नहीं निकलता है। इसलिए मेरी महिमा थोड़ी बड़ी है। हां, कानूनी संदर्भों में मंज़ूरी ही ली जाती है। वैसे भी, कानून के पचड़े में पड़कर आज तक किसे प्रसन्नता हुई है? इसीलिए वहां मैं नहीं हूं। मंज़ूरी है।

विकास वशिष्ठ
प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

भारत – एक उभरती महाशक्ति

पच्चीस साल पहले, 1995 में, अमेरिका ने भारत को "उभरता हुआ बाज़ार" घोषित किया था। तब शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि भारत वैश्विक राजनीति एवं अर्थव्यवस्था में अपनी पहचान स्थापित कर इतना विकसित हो सकेगा। ये और बात है कि इसके लिए देश के नीति निर्माताओं को कई बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। 1990 के दौरान देश का विदेशी मुद्रा भंडार भी काफ़ी कम हो गया था तथा देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश [एफडीआई] भी कमजोर पड़ गया था। लेकिन 1991 के आर्थिक सुधारों ने इस इबारत को बदल दिया। एक तरफ़ निवेश में वृद्धि हुई, सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ और दूसरी तरफ़ गरीबी उन्मूलन में भी काफ़ी मदद मिली। भारत आज एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर है और सबके ज़ेहन में एक ही सवाल है: क्या भारत महाशक्ति बनने की राह पर है?

इस सवाल के जवाब तक पहुंचने के लिए कुछ बातों पर विचार करना ज़रूरी है। 1990 से भारत की अर्थव्यवस्था में आए बदलाव के 2 प्रमुख कारण हैं: एक, उद्यमिता का बढ़ना और दूसरा, निजी क्षेत्र में मध्यम वर्ग की वृद्धि। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि भारत में प्रति व्यक्ति आय में बहुत ज़्यादा असमानता है। साथ ही यहां उपभोक्ताओं का स्वरूप विस्तृत, अप्रत्याशित और परिवर्तनशील है। आईएमएफ के अनुमान के अनुसार, 2011 में भारत, जापान की अर्थव्यवस्था को पछाड़कार जीडीपी के हिसाब से विश्व में पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना। वास्तविक जीडीपी के अनुसार, अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हमारी है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, 2015 में, भारत ने सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बनने के लिए चीन को भी पीछे छोड़ दिया था।

इन तथ्यों के बावजूद, यह कहना गलत नहीं होगा कि महाशक्ति बनने की राह में भारत को अभी और चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। तथापि, भारत अपने लक्ष्य के लिए प्रयासरत है, प्रतिबद्ध है। ऐसी कुछ चुनौतियों और संभावनाओं को इस तरह समझा जा सकता है:

चुनौतियां

आंतरिक

आंतरिक बाधाओं में गरीबी, बेरोज़गारी, परिवहन के बुनियादी ढांचे की कमी, अशिक्षा आदि को रखा जा सकता है। इन्हें दूर करने के कई उपाय हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम अपने विनिर्माण उद्योग को और मज़बूत बनाएं तो कई समस्याओं का निवारण हो सकता है। वर्तमान में, भारतीय जीवीवी में जहां सेवा क्षेत्र का योगदान 55% का है, वहीं विनिर्माण क्षेत्र का योगदान केवल 29% है। ऐसे में "आत्मनिर्भर भारत" प्रशंसनीय कदम है। इसी प्रकार, बुनियादी ढांचे को मज़बूत करना भी ज़रूरी है। देश के ग्रामीण इलाकों में तो मूलभूत सुविधाओं का ही अभाव है। यहां पानी, आवास, सड़कें, शिक्षा, बिजली जैसी बुनियादी समस्याओं से जूझ रहे लोग हर शहर में मिल जाएंगे।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, 85% आबादी सिर्फ़ पीने के पानी तक पहुंचने में ही सक्षम है और केवल 31% आबादी ही बेहतर स्वच्छता सुविधाओं का उपयोग कर पाती है। भारतीय अचल संपत्ति की दर लगभग आबादी के बराबर है। फिर भी अभी लोगों के लिए घर खरीदना सपना ही बना हुआ है। पिछले कुछ दशकों में, भारत में एकल परिवारों के बढ़ते रुझान के कारण, शहरी क्षेत्रों में घरों की मांग काफ़ी बढ़ी है।

बाहरी

बाहरी बाधाओं की बात करें, तो चीन और पाकिस्तान का मिलकर कूटनीति करना भारत के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकता है। हाल ही में लद्दाख में चीन के साथ हुई झड़प के बाद, चीन भारत के महाशक्ति बनने के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट साबित हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सीट के लिए, न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप की सदस्यता एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय निकायों में भारत की स्थिति का चीन विरोध करेगा। चीन का मुक़ाबला करने के लिए, भारत को अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ अपने सम्बन्धों को और मज़बूत करने की आवश्यकता है। वैश्विक संबंधों में भागीदारी और गठजोड़ बनाने के साथ भारत के लिए अपनी राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा भी अत्यंत अहम है।

कोविड-19, तालाबंदी और बेरोज़गारी के चलते वस्तुओं और सेवाओं की खपत भी प्रभावित हुई है। भारत महाशक्ति बनने में सक्षम है, बशर्ते कि भारत सरकार द्वारा बनाई जा रही रणनीतियों को समुचित रूप से लागू किया जाए और आम नागरिकों के हित की बात उनकी ही भाषा में समझाई जाए। कठिनाइयां तो बहुत हैं, परंतु भारत के पास कई सुनहरे अवसर भी हैं। ऐसे अवसर जो बाकी देशों की तुलना में भारत के लिए अनुकूल साबित हो सकते हैं।

अवसर

- **अनुकूल जनसांख्यिकीय लाभांश :** क्रय शक्ति क्षमता के मामले में भारत विश्व में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। विविध जनसांख्यिकी किसी भी व्यवसाय के लिए एक विशाल ग्राहक आधार बनाने में सहायक होती है। भारत सरकार की प्रधानमंत्री आवास और जन-धन जैसी योजनाएं अर्थव्यवस्था में नागरिकों की औपचारिक भागीदारी को बढ़ाती हैं। इससे पिछले 6-7 वर्षों में वित्तीय सेवाओं तक निम्न आय वर्ग की पहुंच भी बढ़ी है। हालांकि, इस दिशा में अभी और प्रयास करने बाकी हैं।

सहायक नीतिगत ढांचा

अर्थव्यवस्था केवल उपभोक्ता आधार पर नहीं बढ़ सकती। इसलिए सहायक नीतिगत ढांचा ऐसा हो जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को सक्षम बनाने में महत्त्वपूर्ण हो। इसी को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने कई क्षेत्रों में ऐसी नीतियां अपनाई हैं, जिनसे महामारी से उत्पन्न होने वाली मंदी से राहत मिले।

वस्तु और सेवा कर

भारतीय अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र पर बहुत अधिक निर्भर होने के कारण, कर चोरी के रूप में देश को काफ़ी नुकसान झेलना पड़ता था। किन्तु वस्तु और सेवा कर लागू होने से देश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिली है। इससे राजस्व आधार मज़बूत हुआ है तथा निवेश और वृद्धि पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

कारोबार सुगमता

आर्थिक सुधारों से देश में कारोबार करना पहले से आसान हो गया है, जिसके चलते, भारत आज दुनिया के अग्रणी उद्यमों के लिए एक आकर्षक निवेश स्थान बन गया है। दुनिया की शीर्ष कंपनियां भारत में निवेश कर रही हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण है टेस्ला, जो बेंगलूरु में विनिर्माण इकाई लगाने वाली है।

- **'मेक इन इंडिया' की पहल :** दुनिया भर से निवेशों को आकर्षित करने, भारत के विनिर्माण क्षेत्र को मज़बूत करने और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए मेक इन इंडिया प्रमुख कार्यक्रम है। इसका एक उद्देश्य अनावश्यक कानूनों तथा विनियमों को समाप्त कर, सरकार को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाते हुए भारत की "व्यवसाय सुगमता" रैंकिंग को सुधारना भी है।

भारत के महाशक्ति बनने की संभावनाएं

भारत में गरीबी का स्तर निरंतर कम हो रहा है। अप्रैल 2020 में जारी विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार "21वीं सदी के दशक से, भारत ने गरीबी को कम करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्ष 2011 और 2015 के बीच 90 मिलियन से अधिक लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठने में कामयाब रहे और उनके जीवन स्तर में भी सुधार आया है। कृषि बाज़ारों को मुक्त करने, कोल्ड चेन को मज़बूत करने जैसी नई पहलों से बुनियादी ढांचागत अड़चनें दूर करने में मदद मिली है। रक्षा उत्पादन में विदेशी निवेश की हिस्सेदारी 49% से बढ़ाकर 74% कर दी गई है।

अब भारत को शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं मे सुधार लाने की ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त, भारत को अपने विदेशी द्विपक्षीय सम्बन्धों को मज़बूत करने की भी आवश्यकता है। भारत के पास महाशक्ति बनने की अपार संभावनाएं हैं। भारत अपनी शक्तियों का सही प्रयोग करे तो निश्चय ही इस मुकाम को हासिल कर लेगा। और वह दिन दूर नहीं, जब हम वैश्विक महाशक्ति होने पर गर्व महसूस करेंगे।

डिजिटल इंडिया

भारत सरकार के डिजिटल इंडिया अभियान में इंटरनेट कनेक्टिविटी को बढ़ाने तथा देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने पर जोर दिया जा रहा है। डिजिटल इंडिया पहल से न केवल भ्रष्टाचार कम होगा, बल्कि नागरिकों को सार्वजनिक सेवाएं सुलभ होंगी। भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए यह साबित होगा।

नम्रता सिंघल
प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

सांस्कृतिक एकता और समरसता का उत्सव

बैंक में हर साल दिवाली के पहले दिन पारंपरिक परिधान दिवस मनाया जाता है, ताकि हम सब एक-दूसरे की संस्कृति से रू-ब-रू हो सकें। इस दिन सब अधिकारी अपने-अपने राज्य के पारंपरिक परिधान में दफ़्तर आते हैं।

इस दिन कार्यालय में उत्सवपूर्ण माहौल रहा। विभिन्न राज्यों की कलाकृतियां आकर्षण का विशेष केंद्र रहीं। अधिकारियों ने पूर्वोत्तर की हस्तनिर्मित टोकरी से लेकर विभिन्न वाद्य यंत्रों, परिधानों, रंगोली और पंजाबी खटोले जैसी चीज़ों से दफ़्तर को सजाया।

समाज की हक़ीक़त: आदमी और गिद्ध

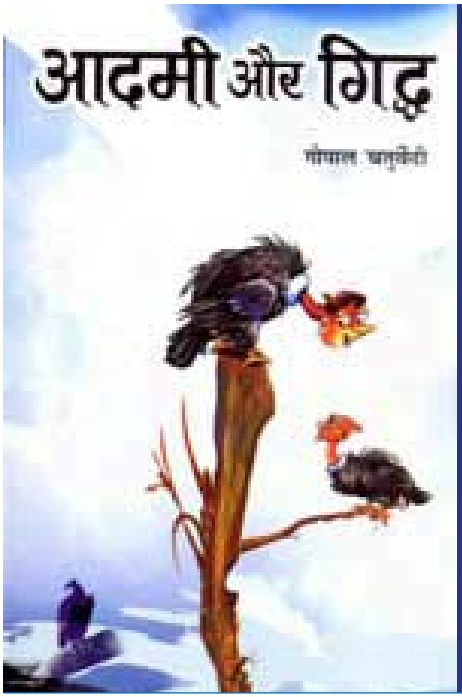

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध 'साहित्यकार' व 'व्यंग्यकार' श्री गोपाल चतुर्वेदी की कुछ चुनिंदा व्यंग्य लेखों में से एक है। व्यंग्य को व्यवस्थागत विसंगतियों पर चोट करने का कारगर हथियार बनाकर संघर्ष करने की विरल लेखकीय परंपरा में श्री गोपाल चतुर्वेदी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

इस पुस्तक में वर्णित व्यंग्य लेख अत्यंत धारदार हैं और वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों की पोल खोलते नज़र आते हैं।

यह पुस्तक छब्बीस (26) अलग-अलग प्रसंगों का संकलन है, सारे प्रसंग अपने आप में कुछ गंभीर चुनौतियों को प्रस्तुत करते हैं तथा बड़े ही मार्मिक ढंग से सामाजिक विषयों का चित्रण करते हैं। प्रस्तुत है इन्हीं प्रसंगों में से कुछ ख़ास। चुनिंदा विषयों का संक्षिप्त विवरण जो मुझे काफ़ी प्रासंगिक प्रतीत हुए :

1) **साहित्य का ब्राह्मणवाद :** साहित्य का गिरता स्तर सरकारों द्वारा साहित्य व साहित्यकारों के प्रति घटती संवेदना को प्रदर्शित करता है। आज के लेखन में सामाजिक मुद्दों का न समुचित चित्रण होता है, न सामाजिक पक्षपात के विरुद्ध उनकी ऐतिहासिक मनोव्यथा और मर्मांतक पीड़ा की अभिव्यक्ति है। जो है वह सिर्फ़ रस्म-अदायगी है। लेखक का मानना है कि इस नाइंसाफ़ी को सिर्फ़ आरक्षण से हटाया जा सकता है। हर पत्र-पत्रिका के संपादकों, स्टाफ और संवाददाताओं तथा प्रकाशित कॉलमों में तत्काल प्रभाव से साठ प्रतिशत के आरक्षण की अनिवार्यता से साहित्य के स्तर का सुधार जैसे व्यंग्य काफ़ी प्रासंगिक हैं।

2) **नारद का दर्द :** लेखक के अनुसार स्वर्ग के प्रशासन में नारदजी का रोल कुछ क्लीयर नहीं है, नारद सबका जी बहलाते हैं, इसलिए हरदिल अज़ीज़ हैं। लेखक ने स्वर्ग लोक तथा ख़ासकर नारदजी एवम् स्वर्गलोक का भारत को लेकर दुखी होना; कथनी-करनी का अंतर, भ्रष्ट प्रशासन, सिद्धांत और आदर्शों की तिलांजलि देकर सत्ता की चकाचौंध में खोया आत्मकेंद्रित नेतृत्व, भौतिकता की अंधी दौड़ में लगे लोग, अमीरों और गरीबों के बीच निरंतर चौड़ी होती हुई खाई, नैतिक मूल्यों का अंधापन इत्यादि सामाजिक मुद्दों का विवरण प्रस्तुत किया है।

3) **उल्लू न होने का दुःख :** लेखक के अनुसार उल्लू बनना श्रमसाध्य ही नहीं अपितु दैवीय कृपा पर भी निर्भर है। दुनिया में आज उल्लू बनने व बनाने की प्रतियोगिता है। हरिद्वार से लेकर हार्वर्ड तक उल्लू प्रशिक्षण की संस्थाएं खुली हैं। डोनेशन देकर निकलते हैं, संस्थाओं के चक्कर लगाते हैं, संस्थाओं के चक्कर लगाते हैं कि किसी जुगाड़ से उनका लख़्त-ए-जिगर किसी न किसी उल्लू केन्द्र में घुस ले। फिर तो पौ-बारह है। दरअसल, उल्लू होना आज के समाज की ज़रूरत और लक्ष्य बन गया है।

4) **आदमी और गिद्ध :** यह व्यंग्य जो इस पुस्तक का शीर्षक भी है, से लेखक मानव जीवन तथा समाज की एक और विसंगति से रू-ब-रू कराते हुए यह बताते हैं कि एक दूसरे की जान लेने के लिए धरती पर इंसान ही काफ़ी है। गिद्धों की नैतिकता इंसानों से कहीं अलग व सुदृढ़ है, गिद्ध जीते जी किसी पर हमला नहीं करते और प्राण जाने का इंतज़ार तो करते हैं। आदमी-आदमी की समानता केवल कहने की बातें हैं। सबके-सब-सत्ता-अधिकार, धन एवं अहम के आतंक से त्रस्त हैं। गिद्धों में ऐसी कोई बात नहीं होती, वहां तो सब बराबर हैं, लाश के गोश्त पर वो नहीं झगड़ते, उसे मिल-बांटकर खाते हैं। जबकि इंसान तो किसी की सहायता करने में भी अपना स्वार्थ ढूंढ़ते हैं। उनकी तुलना में गिद्धों का जीवन कितना सरल है। सारे-के-सारे गिद्ध एक जैसे दिखते हैं। वो सिर्फ़ चलने में समर्थ नहीं, आसमान भी अपने पंखों से नापते हैं। आदमी चलने में समर्थ होने के बावजूद पैदल चलने तक से कतराता है।

(नई दिल्ली कार्यालय द्वारा आयोजित पुस्तक सार प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

अमन कुमार
मुख्य प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

अच्छाई के लिए संघर्षरत रहने की कहानी है प्रतिज्ञा

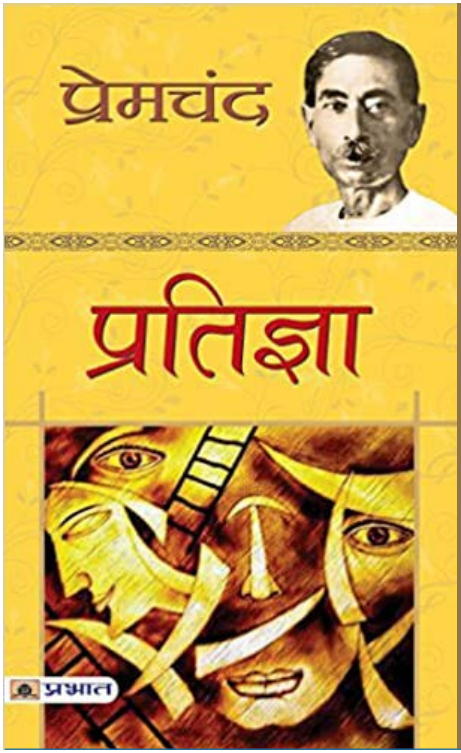

प्रस्तुत सारांश हिन्दी के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखे हुए उपन्यास की कहानी का है। इस कहानी में उन्होंने तत्कालीन समाज में विधवा स्त्रियों की दशा का वर्णन करने का प्रयास किया है। इस दीन दशा के सुधार के प्रयास की प्रतिज्ञा ही इस कहानी का मूल है। इसमें विषम परिस्थितियों में घुट-घुट कर जीने वाली नारी की विवशताओं और समाज की नियति को दिखाया गया है। प्रेमचन्द ने ख़ुद एक बाल - विधवा से विवाह करके समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया था।

दो दोस्त अमृतराय और दाननाथ एक सभा के एक समाज सुधारक का विधवा विवाह पर व्याख्यान सुन रहे थे। इस व्याख्यान का गहरा प्रभाव अमृतराय के मन-मस्तिष्क पर पड़ता है। अब अमृतराय किसी कुंवारी कन्या की जगह किसी विधवा स्त्री से ही पुनर्विवाह करने का दृढ़ निश्चय कर लेते हैं। परन्तु दाननाथ उनके इस विचार से सहमत नहीं होते हैं।

प्रेमा जो अमृतराय की मंगेतर और उनकी पहली पत्नी की छोटी बहन है वह भी अमृतराय के इस निश्चय को स्वीकार करके उनके मार्ग में कंटक न बनने का निश्चय कर लेती है। प्रेमा के पिता बदरी प्रसाद अंततः प्रेमा का विवाह दाननाथ से करने का मन बना लेते हैं।

दाननाथ बहुत पहले से प्रेमा से प्रेम करते थे। परन्तु अमृतराय की पत्नी का देहावसान होने के पश्चात बदरी प्रसाद ने प्रेमा का विवाह दाननाथ की जगह

अमृत राय से करने का विचार कर लिया था, परन्तु इसकी वजह से दोनों मित्रों की गहरी मित्रता में कोई अन्तर न आया था और दाननाथ ने आजीवन विवाह न करने का फैसला ले लिया था।

परन्तु अब भी दाननाथ प्रेमा से विवाह संकोच के कारण मना करना चाहते हैं। परन्तु अमृतराय के अत्यधिक ज़ोर देने पर विवाह के लिए तैयार हो जाते हैं।

पूर्णा, प्रेमा की सहेली है और प्रेमा के घर के पास ही रहती है। उसके विवाह के दो-तीन वर्ष ही हुए हैं। उसके पति बसन्त कुमार एक दिन नदी में तैरते हुए ही जलमग्न हो जाते हैं।

बदरी प्रसाद विधवा पूर्णा को बेटी मान कर अपने घर में आश्रय देना चाहते हैं। बदरी प्रसाद का पुत्र कमलाप्रसाद जो बहुत कंजूस लम्पट और कुटिल व्यक्ति है। और उसकी इन्हीं आदतों के कारण उसकी अपनी विवाहिता से भी नहीं बनती है। बदरी प्रसाद का यह मन जानकर कमलाप्रसाद पूर्णा के घर जाता है जिससे वह पूर्णा को अपने घर न आने के लिए समझा दे।

परन्तु वह पूर्णा को देखते ही उस पर आसक्त हो जाता है। और उसको आश्रयहीन और अबला जानकर उसकी इस स्थिति का फायदा उठाने का मन बना लेता है। और पूर्णा को अपने घर लाने के लिए ख़ुद ही कहार भेज देता है।

सुमित्रा अब दिन-रात पूर्णा के साथ ही रहने लगती है। पूर्णा से एकांत में मिलने का अवसर न मिल पाने से कमलाप्रसाद का क्रोध सुमित्रा के प्रति बढ़ता ही जाता है।

इधर अमृतराय अपना सारा धन जायदाद देकर विधवा स्त्रियों के लिए आश्रम "वनिता भवन" का निर्माण आरम्भ कर देते हैं और लोगों से इसमें सहायता के लिए प्रार्थना करते हैं। प्रेमा विवाह के पश्चात पूर्णतः दाननाथ को समर्पित हो जाती है। फिर भी दाननाथ को लगता रहता है कि प्रेमा अब भी अमृतराय से प्रेम करती है। इन विचारों से दाननाथ के मन में अमृतराय के प्रति द्वेष भावना आ जाती है। और वह भी हिन्दू धर्म संरक्षण में अपना व्याख्यान बोलते हैं- जो लोग विधवा विवाह, जाति-पांति के भेदभाव को मिटाने को गलत समझते हैं, वो दाननाथ के साथ हो जाते हैं। कमलाप्रसाद जो विधवा विवाह के विरोध में है और अमृतराय के विरोध में रहता है दाननाथ को अपनी ओर मिला लेता है। पूर्णा को रिझाने के लिए कमलाप्रसाद पूर्णा और सुमित्रा दोनों के लिए दो रेशमी साड़ियां लाता है। सुमित्रा तिरस्कार करके साड़ियां फेक देती है। अपने अपमान और योजना को विफल देखकर कमलाप्रसाद कई

दिन तक घर के अन्दर नहीं आता है। और घर की बैठक में ही रहना शुरू कर देता है।

पूर्णा को लेकर कमलाप्रसाद की नीयत पर सुमित्रा को शक हो जाता है। वह कमलाप्रसाद को मनाने के लिए नहीं जाती है। परन्तु अपनी स्थिति और इज्जत की रक्षा के लिए पूर्णा, कमलाप्रसाद को सुमित्रा की ओर से समझाने के लिए चली जाती है।

पूर्णा को अकेला देखकर कमलाप्रसाद उसे अपनी कुवासना का शिकार बनाना चाहता है। परन्तु पूर्णा बच निकलती है। सुमित्रा यह देख लेती है। सुमित्रा पूर्णा से कमलाप्रसाद की नीयत समझा कर घर से जाने के लिए कहती है। तभी कमलाप्रसाद आकर बताता है कि पूर्णा को प्रेमा ने बुलाया है और वह वहीं जा रहा है। कुछ सोचकर पूर्णा उसके साथ-साथ चल देती है।

रास्ते से कमलाप्रसाद अपना तांगा अपने एक बगीचे की ओर मोड़ लेता है। पूर्णा के प्रतिकार के बाद वह अपनी इच्छा पूरी करना चाहता है। पूर्णा उस पर कुर्सी से जोरदार प्रहार करती है और वहां से भाग जाती है। अंततः पूर्णा विधवा आश्रम "वनिता भवन" में शरण लेती है।

इधर कमला प्रसाद के कुकर्म के कारण सारे शहर में कमलाप्रसाद और दाननाथ की बदनामी हो जाती है। और दाननाथ को समझ आ जाता है कि गलत अमृतराय नहीं वरन् कमलाप्रसाद है। वह अपने किए पर बहुत पछताते हैं। कुछ दिनों बाद दाननाथ को अमृतराय का पत्र मिलता है। जिसमें अमृतराय ने विश्वासपूर्वक दाननाथ को बेदाग लिखा होता है। यह पत्र पाकर वह तुरन्त अमृतराय से मिलने चला जाता है।

अमृतराय दाननाथ को पूरा आश्रम दिखाते हैं। दाननाथ के अमृतराय से पूर्वविवाह का पूछने पर अमृतराय आश्रम से ही विवाह करने की बात बताते हैं।

अमृतराय की इस विचित्र प्रतिज्ञा पर दाननाथ मूक हो जाते हैं।

(नई दिल्ली कार्यालय द्वारा आयोजित पुस्तक सार प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

आशीष सिंघल
मुख्य प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

कोमल एहसासों की कहानी है बड़ी दीदी

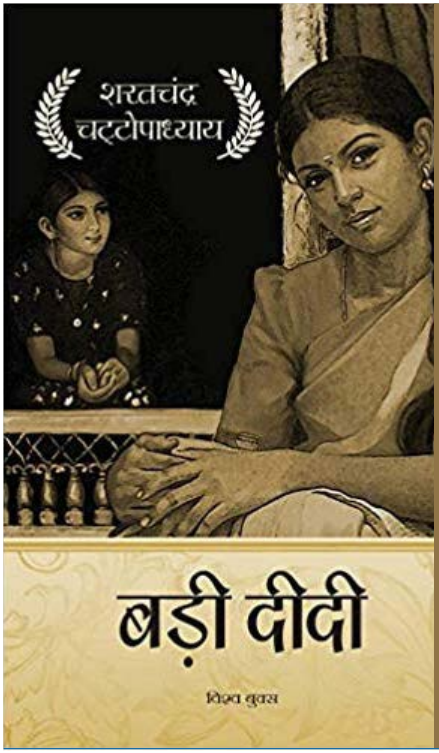

यह कहानी है एक ऐसे नवयुवक सुरेन्द्र की जो अपनी विमाता के नियंत्रण में रहा। जो माता ने खिला दिया वो खा लिया, जो पहना दिया वो पहन लिया। जो जब भी करने को बोला वो कर दिया। कभी ख़ुद से कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं हुई और न ये समझ में आई कि वो अपनी ज़िंदगी कैसे जी सकता है। उसके लिए ज़िंदगी जीने का सिर्फ़ यही एक तरीका था जो बचपन से देखा था और समझा था। बस एक चीज़ थी जो वह अपने मन से करता था और वो थी पढ़ाई।

एक दिन सुरेन्द्र के मित्र ने उसके दिमाग में यह बात डाल दी कि उसके जैसा तीव्र दिमाग वाला लड़का अगर विलायत जाकर पढ़ाई करे तो भविष्य में उन्नति के बहुत सारे दरवाज़े खुल जाएंगे। यह बात उसके दिमाग में इस तरह घर कर गई कि मां-बाप के मना करने के बावजूद वो एक रात घर छोड़कर कलकत्ता भाग गया, यह सोचकर कि विलायत न सही, शहर में भी उसे अपना भविष्य बनाने का मौका ज़रूर मिलेगा।

काल्पनिक बातें और सच्चाई में बहुत अंतर होता है, यह बात सुरेन्द्र को कलकत्ता पहुंचते ही समझ आ गई थी, यहां न कोई घर था, न कोई खाना खिलाने वाला और न कोई कपड़े साफ करने वाला था। कलकत्ता आ कर सुरेन्द्र को एहसास हुआ कि जीने के लिए सारे जतन ख़ुद ही करने पड़ते हैं। आश्रय के लिए ख़ुद ही जगह ढूंढ़नी होगी, नींद और भूख का उपाय ख़ुद ही करना पड़ता है।

काफ़ी संघर्ष करने के बाद सुरेन्द्र को एक ज़मींदार के घर शिक्षक की नौकरी मिल गई जहां उसे एक छोटी-सी लड़की प्रोमिला को पढ़ाना था। प्रोमिला की बड़ी बहन एक विधवा थी जिसे घर में सभी बड़ी दीदी कह कर बुलाते थे, उसने सुरेन्द्र की सारी ज़रूरतों का ध्यान रखना शुरू कर दिया। भले ही बड़ी दीदी सुरेन्द्र की एक-एक ज़रूरत का ध्यान रखती थी और सिर्फ़ सुरेन्द्र का ही नहीं वो घर के सभी सदस्यों का ध्यान रखती थी। सुरेन्द्र के लिए बड़ी दीदी जैसे उसकी ज़रूरतों को पूरा करने का एकमात्र ज़रिया हो गई थी। कुछ भी चाहिए तो सिर्फ़ बड़ी दीदी का नाम ही ज़ुबान पर आता।

ऐसे ही सुरेन्द्र के दिन बीतने लगे, कलकत्ता में और उसकी ज़िंदगी में सिर्फ़ दो चीज़ें मायने रखती थी, एक उसकी पढ़ाई और दूसरी बड़ी दीदी। भले ही वो बड़ी दीदी से मिला न हो, पर मन ही मन दोनों के बीच एक अनकहे एहसास का जन्म हो चुका था। एक बार बड़ी दीदी के किसी दूसरे शहर जाने से सुरेन्द्र इतना विचलित हो गया कि उनके वापस आने के दिन गिनने लगा और इसी उत्साह में जब वो वापस आई तो सुरेन्द्र मिलने के लिए बिना बताए ही उनके पास कमरे में चला गया और यह बात एक विधवा के लिए अपमानजनक थी। उस दिन के बाद से बड़ी दीदी ने सुरेन्द्र से दूरी बनानी शुरू कर दी थी, क्योंकि वो नहीं चाहती थी कि समाज में उसके बारे में कोई अफ़वाह फैले।

बड़ी दीदी का यह नया व्यवहार सुरेन्द्र को खलने लगा था। उसने नौकर को भी यह कहते सुना कि कोई नया शिक्षक आएगा प्रोमिला को पढ़ाने, यह बात सुरेन्द्र को अच्छी नहीं लगी और वो गुस्से से रात को घर से निकल गया। सात दिनों तक उसे कोई ढूंढ़ नहीं पाया और यह बात बड़ी दीदी को अंदर ही अंदर खाने लगी। क्योंकि उन्हें इस बात का एहसास था कि उनके व्यवहार की वजह से ही सुरेन्द्र घर छोड़कर चला गया था। आख़िरकार जब सात दिनों बाद सुरेन्द्र मिला तो उसकी हालत दयनीय थी, उसे एक दुर्घटना में काफ़ी चोट आई थी और वो काफ़ी बीमार था। उसकी दयनीय हालत देखकर उसके मां-बाप के साथ उसे भेज दिया गया। सुरेन्द्र और बड़ी दीदी की अनकही भावनाएं अनकही ही रह गई।

पांच साल बीत चुके हैं, सुरेन्द्र की शादी शांति देवी से हो चुकी है और वो गांव का ज़मींदार है लेकिन उसका सारा काम इसका मैनेजर ही संभालता है। सुरेन्द्र की तबीयत आज भी ख़राब ही रहती है। पांच साल पहले हुए दुर्घटना की वजह से। आज भी उसका हृदय बड़ी दीदी की याद में बिलखता रहता है।

शायद यही वजह है कि उसकी सेहत पूर्णरूप से सुधर नहीं पाई है, क्योंकि कहीं न कहीं आज भी उसके मन में पांच साल पहले की भावनाएं ज़िंदा हैं।

इधर बड़ी दीदी भी अपने पिता का घर छोड़कर दूर किसी गांव में रहने आ गई है क्योंकि भाई की शादी के बाद घर में वो सम्मान नहीं मिल रहा था। आज भी बड़ी दीदी को सुरेन्द्र के दूर चले जाने का ग़म सताता रहता है, लेकिन वो अपनी भावनाएं किसी से बांट नहीं सकती। बड़ी दीदी सुरेन्द्र के गांव के पास किसी दूसरे गांव में रहती है। इस बात का पता जब सुरेन्द्र को अचानक कहीं से चला तो वो बड़ी घबराहट में उससे मिलने निकल गया। शारीरिक हालत ठीक नहीं होने के बावजूद वह घंटों सफ़र कर के बड़ी दीदी के गांव पहुंचा, वहां जाकर उसे पता चला कि वो गांव छोड़ कर जा चुकी है और कुछ देर पहले ही निकल गई है। ये बात सुनकर सुरेन्द्र की हालत और भी ख़राब हो गई और वो उनकी जाने की दिशा में भागने लगा। सुरेन्द्र की तबीयत और भी ख़राब होने लगी थी और दीदी तक पहुंचते-पहुंचते वो बेहोश होकर गिर गया। बड़ी दीदी को यह समझ आ गया था कि वो सुरेन्द्र ही है। उसे उठा कर अपनी नाव में लिटाया। बेहोशी में सुरेन्द्र सिर्फ़ एक ही बात दोहरा रहा था कि "क्या आप बड़ी दीदी हैं?"

बड़ी दीदी सुरेन्द्र की यह हालत देखकर बहुत दुखी थी। लाख इलाज के बाद भी सुरेन्द्र की हालत ठीक नहीं हो पा रही थी। पांच साल पहले हुई दुर्घटना का असर आज ज़्यादा दिख रहा था। सुरेन्द्र की पत्नी उसके पास ही बैठी थी। अंधेरा होने को था, सुरेन्द्र ने धीरे-से बड़ी दीदी को अपनी तरफ़ झुका कर बोला- "जिस तरह आपने मुझे पांच साल पहले सज़ा दी थी, वैसे ही आज मैं आपको दे रहा हूं। अब मेरा बदला पूरा हो गया न?" यह सुनते ही बड़ी दीदी के जैसे होश गायब हो गए और जब होश आया तो सब कुछ मिट चुका था। एक अधूरी कहानी अधूरी ही रह गई।

(नई दिल्ली कार्यालय द्वारा आयोजित पुस्तक सार प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

शालिनी वर्मा
प्रशासनिक अधिकारी, नई दिल्ली कार्यालय

हिन्दी का प्रथम 'स्पर्श', दिलों में फैली मुस्कुराहट

- 15 दिन, 10 प्रतियोगिताएं और 4 वेबिनार
- कार्यालय के 25 अधिकारियों को पुरस्कार

हिन्दी महोत्सव के दौरान महापुरुषों की सूक्तियों के बैनर बनवाए गए। बैंक परिसर के प्रवेश द्वार पर ऐसे ही एक बैनर के साथ नई दिल्ली कार्यालय के क्षेत्रीय प्रमुख और कुछ अधिकारी।

कुछ संयोग मन के इतने करीब होते हैं कि मन में मुस्कुराहट फैल जाती है। आपकी स्क्रीन पर 'एक्ज़िम स्पर्श' का ताज़ा अंक है और जब हम 14 से 30 सितंबर तक मनाए गए हिन्दी महोत्सव के बारे में लिखने बैठे तो ख़याल आया कि यह ऐसा ही संयोग है। साल 2020 की 14 सितंबर ही वह तारीख़ थी, जब इस स्पर्श का प्रथम स्पर्श हम सबको हुआ था। हिन्दी महोत्सव के शुभारंभ पर ही प्रबंध निदेशक द्वारा इस ई-पत्रिका का ई-विमोचन किया गया था।

"राजभाषा के लिए मैं जांच बिंदु के रूप में काम करता रहा हूं। मुझे आशा है कि नई पीढ़ी बैंक में हिन्दी को नए मुकाम पर ले जाएगी।"

- डेविड रस्कीना, प्रबंध निदेशक

"कोई भी काम करने से पहले सोचें कि क्या यह काम हिन्दी में हो सकता है। हिन्दी में काम की पहल ऐसे ही की जा सकती है।"

- हर्षा बंगारी, उप प्रबंध निदेशक

बीते कुछ समय में काम करने से लेकर उत्सव मनाने तक के तरीके, सब बदल गए। हिन्दी महोत्सव भी अलग तरीके से मनाया गया। सारी प्रतियोगिताएं ऑनलाइन और प्रविष्टि के ज़रिए आयोजित की गईं। प्रबंध निदेशक और उप प्रबंध निदेशक के संदेश उन्हीं की आवाज़ में ऑडियो फॉर्मैट में जारी किए गए।

चाय पे चर्चा (राजभाषा संवाद) | महोत्सव के शुभारंभ के दिन ही प्रबंध निदेशक और उप प्रबंध निदेशक ने प्रधान कार्यालय तथा नई दिल्ली कार्यालय स्थित सभी समूह प्रमुखों के साथ राजभाषा संवाद के रूप में एक अनौपचारिक चर्चा की।

हिन्दी में काम को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल परिवेश बनाने पर ज़ोर

राजभाषा संवाद का केंद्र बिंदु रहा- बैंक में हिन्दी में काम करने के लिए और अधिक अनुकूल माहौल कैसे बनाया जाए। इसके लिए समूह प्रमुखों से कई सुझाव मिले। समूह प्रमुखों के लिए एक प्रतियोगिता भी रखी गई।

विशिष्ट वक्ता व्याख्यान माला

प्रसिद्ध भाषा चिंतक डॉ. गणेश एन. देवी के साथ 'क्यों ज़रूरी हैं हमारी भाषाएं' विषय पर ऑनलाइन चर्चा भी रखी गई। इस मौके पर बैंक द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2020 के उपलक्ष्य में मुंबई में हुए एक दिवसीय सेमिनार की स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

नई पीढ़ी में भी हों भाषा संस्कार, इसलिए...

कॉलेज के छात्रों के लिए प्रश्नमंच

- **ताकि** भाषा संस्कार न केवल बचे रहें, बल्कि अगली पीढ़ी में हस्तांतरित भी किए जा सकें।
- दिल्ली और मुंबई के चुनिंदा कॉलेजों के छात्रों के लिए ऑनलाइन क्विज़ का आयोजन।
- 800 से ज़्यादा छात्रों ने लिया हिस्सा, आधे से अधिक छात्र दिल्ली के कॉलेजों से।
- दिल्ली-मुंबई दोनों जगह के विजेता छात्रों को 5-5 पुरस्कारों से किया पुरस्कृत।

बच्चों के लिए बाल वाटिका

- **क्योंकि** बच्चे भाषा की क्यारी में खिलने वाले नन्हे सुमन होते हैं। ऑनलाइन सजी वाटिका।
- पहली बार देश और विदेश स्थित कार्यालयों के अधिकारियों के बच्चे हुए शामिल।
- बच्चों ने पेंटिंग, नृत्य, गीत-कविता गायन, तबला वादन जैसी प्रस्तुतियां भी दीं।
- बच्चों ने RJ सायमा को लिखी चिट्ठियां, साझा की लॉकडाउन के की अच्छी-बुरी बातें।

काव्य की अंजलि से खिलखिलाई अपनी हिन्दी

- बैंक में हर साल मनाया जाता है विश्व हिन्दी दिवस
- इस मौके पर की 2 प्रतियोगिताएं और एक वेबिनार
- ऑनलाइन ही जमी इस बार कविताओं की महफ़िल

"कल जो नई भोर होगी, ख़ुशी से सराबोर होगी।"

- अशोक चक्रधर

यह पंक्ति किसी भी समय में, कैसे भी हालात में, सकारात्मक ऊर्जा से भरती है। हर परिस्थिति पर लागू होती है। चाहे वह महामारी का संदर्भ हो या भाषा की उन्नति का। आज वैश्विक पटल पर हिन्दी जिस तरीके से बढ़ रही है, निश्चित ही वह देश के लिए, समस्त भाषा प्रेमियों के लिए, ख़ुशी की बात है।

विश्व हिन्दी दिवस के मौके पर बैंक में कविता पाठ प्रतियोगिता के रूप में 'काव्यांजलि' का आयोजन किया गया। कोविड-19 के चलते कविताओं की यह महफ़िल ऑनलाइन ही सजी। इसमें प्रधान कार्यालय सहित विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

प्रतियोगिता में हिन्दीतर भाषी अधिकारियों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। हिन्दीभाषी और हिन्दीतर भाषी श्रेणी में कुल 10 अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया। कविता‌पाठ की लोकप्रियता दुनियाभर में बढ़ रही है। पिछले दिनों ऐसी ही एक ख़बर फायनैंशल एक्सप्रेस में छपी भी थी।

हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता

- हिन्दी कवियों को एक कवि सम्मेलन के लिए मिल रहे 20 लाख से 1 करोड़ रुपये तक।
- बॉलीवुड में पटकथा लेखन के लिए हिन्दी के कवि-लेखकों की हमेशा से रही है भारी मांग।
- मशहूर कवि कुमार विश्वास यूएस, ब्रिटेन, दुबई सहित 40 देशों में कर चुके हैं काव्यपाठ।
- राजकमल प्रकाशन के अनुसार, 5 साल में 80% अनुरोध कविता छापने के लिए मिले।
- कविशाला नाम के ऑनलाइन प्लैटफॉर्म पर हर महीने मिलती हैं 10,000 से ज़्यादा प्रविष्टियां।

हिन्दी की वैश्विक स्थिति के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए क्विज़ः

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर बैंक में ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसमें हिन्दी की वैश्विक स्थिति से जुड़े सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे गए थे। इसका उद्देश्य वैश्विक पटल पर हिन्दी की स्थिति के प्रति अधिकारियों की जागरूकता बढ़ाना था। प्रतियोगिता में प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली कार्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों के कुल 20 अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया।

हमारे विचार को किस तरह प्रभावित करते हैं हमारे शब्द

विश्व विख्यात प्रजापिता ब्रह्मकुमारी की लोकप्रिय वक्ता सुश्री बीके शिवानी से ऑनलाइन चर्चा रखी गई। उन्होंने कहा कि हम जैसे शब्दों, जैसी भाषा का प्रयोग करते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। यदि हम ख़ुद से बार-बार कहेंगे कि तबीयत ठीक नहीं है, तो हमें वाकई तबीयत ख़राब लगेगी। इसके उलट, तबीयत कुछ ख़राब भी होगी और हम ख़ुद से कहेंगे कि नहीं! मैं ठीक हूं, तो हम अपने आप को ठीक महसूस करने लगेंगे।

आचार-विचार से लेकर व्यवहार तक पर पड़ता है हमारी भाषा का असर

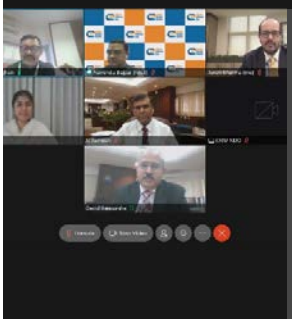

“हमारी भाषा व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते-डालते हमारे आचार-विचार और व्यवहार की भाषा बन जाती है। हम अपने वचनों पर, अपनी वाणी पर संयम न बरतें तो हमारे व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव बन जाता है। क्रोध भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसलिए हमें क्रोध न कर अपने आसपास के माहौल में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखना ज़रूरी है।” – बी.के. शिवानी

रुखसार आलम
प्रशासनिक अधिकारी, नई दिल्ली कार्यालय

मेरी मातृभाषा, मेरा गौरव

- **1999** में यूनेस्को ने 21 फरवरी को 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' घोषित किया था
- **2000** से दुनियाभर में बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए यह दिन विश्व स्तर पर मनाया जाने लगा
- **2021** की थीम रही- 'शिक्षा और समाज में समावेश के लिए बहुभाषावाद को बढ़ावा देना'

"अपनी भाषा में सोचें, अपनी मातृभाषा को बढ़ावा दें।"
- माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू

साल 2021, फरवरी का महीना, 19 तारीख, शुक्रवार। कार्यालय के लाउंज में एक श्वेत पट्ट रखा हुआ है। अधिकारी आ रहे हैं और उस पर अपनी मातृभाषा में, उस भाषा की लिपि में ही लिख रहे हैं- मेरी मातृभाषा, मेरा गौरव। शाम के 4.30 बजे हैं। इस श्वेत पट्ट पर पूर्वोत्तर की मिज़ो व तांखुल से लेकर पंजाबी, उड़िया, उर्दू, तमिल जैसी कई भारतीय भाषाएं एक साथ शोभायमान हो रही हैं। एक छोटे से श्वेत पट्ट पर भारत की भाषाई विरासत दमक रही है। यह बोर्ड अब बाहर लॉबी में सजा है। सामने की ओर कुर्सियां रखी हैं। सुरक्षित दूरी को ध्यान में रखते हुए।

भारतनामाः द आयडिया ऑफ इंडिया

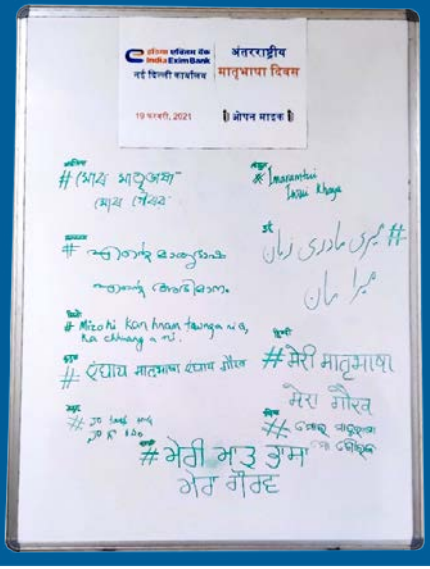

कार्यालय के पब्लिक अनाउंसमेंट सिस्टम पर कुछ गीतों का स्वर सुनाई देने लगता है। एक के बाद एक कुछ सेकेंडों में अलग-अलग भारतीय भाषाओं के गीत बदलते रहते हैं। संगीतमयी संकेत मिलते ही सभी अधिकारी बाहर

लॉबी की ओर जा रहे हैं। वहां ओपन माइक का मंच तैयार है। ओपन माइक-बैंक में भाषाई उत्सवों की कड़ी में एक और कार्यक्रम। तकरीबन अधिकारियों ने अपनी-अपनी कुर्सियां चुन ली हैं। कुछ के हाथ में कुछ काग़ज़ भी दिखाई दे रहे हैं, तो कुछ अभी हंसी-ठिठोली कर रहे हैं।

इसी बीच, स्पीकर से एक आवाज़ आती है, "आप सभी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की शुभकामनाएं। आज के इस कार्यक्रम की सूत्रधार होंगी- स्वाति।" ये आवाज़ है, मुख्य प्रशासनिक प्रबंधक अर्चना मदान की। और माइक मेरे हाथों में थमा दिया जाता है। मैं अचरज और प्रसन्नता के मिले-जुले भावों से माइक थामती हूं और शुक्रिया अदा कर सूत्रधार की भूमिका में आ जाती हूं। और शुरू होता है, शेरों-कविताओं, गीतों-ग़ज़लों, किस्सों-कहानियों और गिटार से निकलती मीठी धुनों का सिलसिला।

19 की उस शाम को, उसमें घुले उस उत्साह को, उस माहौल को, उन प्रस्तुतियों को, उस उल्लास को, जो वहां मौजूद हर अधिकारी के दिल में था, चंद शब्दों में बयां करना मुमकिन नहीं है। एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां। कुछ त्वरित तो कुछ तैयारी वाली। न कोई औपचारिकता, न संकोच। यहां कुछ दिख रहा था तो वह था अपनी भाषा के लिए प्रेम, अपनी भाषा में सहजता और उस भाषा में बोलते हुए चेहरों पर आई ख़ुशी वाली चमक।

कार्यक्रम एक घंटे का निर्धारित हुआ था। लेकिन यह कारवां ऐसा चला कि डेढ़ घंटा कब बीत गया, पता ही नहीं चला। 32 परफॉर्मेंस हो चुकी थीं। आख़िरकार, मैं सूत्रधार हूं और मुझे अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए यह घोषणा करनी पड़ती है कि अब यह इस शाम की आख़िरी परफॉर्मेंस होगी। इस शाम को अलविदा कहते तमाम अधिकारियों के वो ख़ुशदिल चेहरे, अपनी भाषा के प्रति अनुराग की ज़िंदा मिसाल हैं। यूं तो यह कोई प्रतियोगिता नहीं थी। तथापि, 5 सर्वश्रेष्ठ गतिविधियों को बाद में पुरस्कृत भी किया गया।

दो दिन बाद रविवार, 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस है। रविवार छुट्टी का दिन होता है, इसीलिए नई दिल्ली कार्यालय में शुक्रवार को

यह उत्सव मनाया गया। 22 फरवरी को भारतीय भाषाओं से जुड़े रोचक सवालों पर आधारित ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिता रखी गई।

उप महाप्रबंधकों के साथ राजभाषा संवाद

प्रधान कार्यालय की ओर से अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 26 फरवरी को प्रधान कार्यालय व सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के 'उप महाप्रबंधकों के साथ राजभाषा संवाद' कार्यक्रम रखा गया। इसमें बैंक के प्रबंध निदेशक और उप प्रबंध निदेशकों सहित प्रधान कार्यालय व सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के उप महाप्रबंधकों ने हिस्सा लिया और बैंक में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर कुछ समूह प्रमुखों ने भी अपने अनुभव साझा किए। मुमप्र (तरुण) ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि भाषा कोई भी हो, लोग उससे तभी जुड़ते हैं, जब हम उसे सरल बनाते हैं। थोड़ी अनौपचारिकता लाते हैं।

हिन्दी से मराठी सीखना हुआ आसान

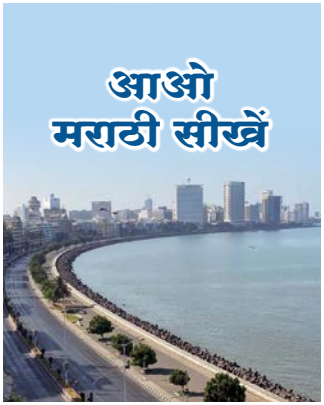

सत्र की शुरुआत में प्रबंध निदेशक द्वारा प्रशासनिक अधिकारी सुश्री नूतन गंगावणे के ज़रिए 'आओ मराठी सीखें' संकलन का विमोचन किया गया। यह बैंक की गृह पत्रिका एक्ज़िमिअस के नियमित स्तम्भ का संकलन है। इसमें ऐसे संवाद शामिल किए गए हैं, जो मुंबई लोकल में सफ़र करने से लेकर महाराष्ट्र में रोज़मर्रा की ज़िंदगी को आसान बनाते हैं। प्रबंध निदेशक ने उपस्थित अधिकारियों से अपने साथ काम कर रहे अधिकारियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के निदेश दिए। मप्र (धर्मेंद्र) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस सत्र का समापन हुआ।

स्वाति जांगड़ा
मुख्य प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

तू मेरी है प्रेम की भाषा...
लिखता हूं,
तुझे रोज़ ज़रा सा...

मंच खुला हो, और अपनी भाषा में कुछ सुनाना हो, तो हम वही सुनाना पसंद करते हैं, जो मन के करीब हो। ऐसा ही मौका था कार्यालय में आयोजित 'ओपन माइक' का। और इन तस्वीरों में उन्हीं यादगार लम्हों को संजोया गया है।

समय का कालचक्र

जब बोया पेड़ बबूल का,
तो आम कहां से खाओगे।

जो बेटा था दुर्योधन,
तो चीर हरण ही पाओगे।

समय का कालचक्र
हर वक़्त दोहराता है।

कल का बना राजा
आज रंक कहलाता है।

बैसाख के बगीचे में
जहां अपनेपन का एका है।

वहीं पतझड़ के पत्तों में
मैंने रिश्तों को बिखरे देखा है।

ऊंची-ऊंची पतंगों को
कट कर गिरते देखा है।

अहंकार के पुतलों को
दशहरों में जलते देखा है।

समय का कालचक्र
समय ख़ुद को दोहराता है।

शिल्पी यादव
प्रशासनिक अधिकारी, नई दिल्ली कार्यालय

दिल का दस्तर-ख़्वान बिछाया, रसोई में पुरुषों ने रंग जमाया

- बैंक में पहली बार मनाया गया अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस
- पुरुषों के लिए विशेष रूप से रखी गई पाक कला प्रतियोगिता

ट्रॉपिकल डिलाइट्स

हैपी आवर्स

नई पहल, नई शुरुआत: बैंक महिला और पुरुष अधिकारियों में भेदभाव नहीं करता है। इसीलिए इस बार से पुरुष दिवस भी मनाने की शुरुआत की गई। पाक कला प्रतियोगिता के लिए 3 टीमें बनीं। ऊपर की तस्वीर से टपकता ट्रॉपिकल डिलाइट्स का ज़ायका।

दिल्ली दरबार

देसी खिचड़ी, स्नेह का तड़का

अधिकारियों ने इस पर भी ख़ास प्रस्तुति दी कि यदि "मैं बैंकर न होता, तो क्या होता"।

ख़ुशी, कुछ अलग करने की: अच्छा लगता है जब हम रुटीन से हटकर कोई चुनौती अपनाते हैं और उसे पूरी करने में कामयाब भी होते हैं। अधिकारियों ने भारतीय और विदेशी व्यंजनों से मेज सजाई और व्यंजनों को जज किया कार्यालय की महिला अधिकारियों ने।

मैं पुरुष हूं, और मुझे भी रुलाई फूटती है

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस के मौके पर मानव संसाधन प्रबंधन समूह की ओर से एक दिलचस्प प्रतियोगिता कराई गई। फ़ेसबुक पोस्ट प्रतियोगिता। इसमें अधिकारियों को एक फ़ेसबुक पोस्ट लिखनी थी। पोस्ट इस वाक्य से शुरू करनी थी- "मैं पुरुष हूं, जो... "वस्तुतः यह प्रयास था, पुरुषों को अपने अंतर्मन की बात रखने, अपनी भावनाओं को ज़ाहिर करने का बहाना देने का। हमारे समाज में माना जाता है कि पुरुष अपने आप को यदा-कदा ही अभिव्यक्त करते हैं। ख़ास तौर पर भावनात्मक मामलों में। यहां हमने इस प्रतियोगिता में विजेता रहे अधिकारियों की चुनिंदा फ़ेसबुक पोस्ट्स को संजोया है। ये मूलतः अंग्रेज़ी में लिखी गई थीं, जिन्हें यहां अनुवाद करके लिया गया है:

स्वरूप चक्रवर्ती

मैं पुरुष हूं, पर रुलाई मुझे भी फूटती है। मुझे रोना आ जाता है, जब मेरी नन्ही-सी बिटिया कहती है, "आमी मम्मा के बेशी भालो बाशी ("पापा! मम्मा ज़्यादा अच्छी है।") कई बार मुझे छोटी-छोटी बातों पर भी रोना आ जाता है। सोचता हूं कि बाबा 5 साल और जी लेते तो आज कितने ख़ुश होते। किराया न दे पाने पर, संगदिल मकान मालिकों के निकाले उन मज़दूरों की लंबी कतारों वाले दृश्य मुझे रुला देते हैं, जो अपने घर जाने के लिए निकल पड़े थे। मैं स्क्रीन पर किसी भावुक दृश्य को देखकर भी रो पड़ता हूं। मुझे तब भी रोना आ जाता है, जब मां कहती हैं, "इतना लंबा हो गया ये लॉकडाउन, तेरे घर आए भी इतने दिन हो गए।" कोई मुझ पर चिल्लाए या कोई पुराना दोस्त बात न करे, तो मुझे रोना आता है। मैं रो पड़ता हूं, जब मैं बेहतर करने की कोशिश करता हूं और बेहतर करता हूं। मुझे रुलाई फूट पड़ती है, जब दफ़्तर से घर लौटने पर मेरी बेटी मुझसे कहती है, "पापा आमी तोमाके खूब भालो बाशी।" (आई लव यू पापा) हां, मैं पुरुष हूं। मुझे भी रुलाई फूटती है।

#IMD2020 #IndiaExim

184 45 कमेंट्स 1 शेयर

वुंग्शोक खोक्यार

मैं ऐसा पुरुष हूं, जो यह मानता है कि एक छोटी-सी नेकी भी किसी की ज़िंदगी में बड़ी असरदार हो सकती है ...दयालुता और उदारता सांसर्गिक होती हैं।

#IMD2020&#IndiaEXIM

178 14 कमेंट्स

विश्वजीत गर्ग

मैं वह पुरुष हूं, जिसे अन्याय से भरी इस दुनिया में जीने पर ग्लानि होती है। जहां औरतों को ऊंचाइयां पर पहुंचने से पहले रोक देने की प्रथा इतनी आम है जैसे ये दुनिया पुरुषों की ही है।

#IMD2020 #IndiaExim

121

उत्कर्ष प्रभू

मैं वह पुरुष हूं, जो अपनी ग़लतियों का सामना करना जानता है, दूसरों को माफ़ करना जानता है, जो प्यार करना और दूसरों की मदद करने की कोशिश करना सीखता है।

#IMD2020 #IndiaExim

74 22 कमेंट्स

अभिषेक मिश्रा

मैं वह पुरुष हूं जो यह सुनकर बड़ा हुआ कि मर्द को दर्द नहीं होता, पर ये जानकर थोड़ा दर्द हुआ कि मुझे बहुत दर्द होता है।
दर्द हुआ जब माता-पिता के सपनों के लिए सोया नहीं।
थोड़ा दर्द तब भी हुआ जब अपने टूटे सपनों के लिए रोया नहीं।
दर्द हुआ जब अपनों को असमय खोया,
थोड़ा दर्द तब भी हुआ जब अकेले में रोया।
दर्द हुआ जब बचपन एक चिड़िया की भांति उड़ गया,
थोड़ा दर्द तब भी हुआ जब ज़िम्मेदारियों का बोझ सिर पर पड़ गया।
दर्द हुआ जब काबिल बनने के लिए कड़ी मेहनत की,
थोड़ा दर्द तब भी हुआ जब किस्मत ने वही मेहनत विफल की।
दर्द हुआ जब दुनिया का हिसाब-किताब मुझे समझ नहीं आया,
थोड़ा दर्द तब भी हुआ जब अपनी इच्छाओं को पूरा करने का वक़्त नहीं मिल पाया।
अब तो दर्द से कोई पुराना नाता सा लगता है,
और मन में बार-बार यही ख़याल उठता है,
कि "मर्द को दर्द हो या न हो, जो दर्द झेलता है वही मर्द बनता है।"

#IMD2020 #IndiaExim

41 08 कमेंट्स

शाम गुलाबी, शहर गुलाबी, पहर गुलाबी

सशक्त महिलाओं से ही बनता है सशक्त समाज

महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक उपलब्धियों के उत्सव के रूप में 08 मार्च, 2021 को बैंक में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस मौके पर बैंक की महिला अधिकारियों के लिए ज्ञान एवं रचनात्मकता पर आधारित कई रोचक गतिविधियां कराई गईं। इस दौरान, नई दिल्ली कार्यालय की एक तस्वीर।

जाने रे जाने, मन जाने है, रंग... रंग गुलाबी है प्रीत रो

महिलाएं इस दिन गुलाबी रंग में नज़र आईं। दरअसल, आयोजकों द्वारा इसकी थीम ही गुलाबी रखी गई थी। कहते हैं कि यह रंग दया, परवरिश और प्रेम का प्रतीक है। यह दोस्ती, स्नेह, सौहार्द, निःस्वार्थ प्रेम और आपसी समझ का द्योतक भी है। महिलाओं के गुणों की तरह गुलाबी रंग के कई शेड्स देखे जा सकते हैं।

टैलेंट शो

बैंक में महिलाओं के लिए एक टैलेंट शो भी आयोजित किया गया। जिसमें बैंक की महिला अधिकारियों ने गायन, नृत्य, वाद्य यंत्र बजाना, एकांकी और चुटकुले सुनाने जैसी अपनी प्रतिभा का मंचन किया। इस अवसर पर नई दिल्ली कार्यालय प्रधान कार्यालय से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए जुड़ा रहा।

सशक्त कदम वो जिन्होंने अपना लक्ष्य ख़ुद चुना, अपना रास्ता भी ख़ुद ही बनाया, ऐसी सशक्त और प्रेरणादायी महिलाओं को एक्ज़िम बैंक सलाम करता है।

सामाजिक-आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान

08 मार्च, 2021 को 'महिला उद्यमियों का सशक्तीकरण' विषय पर आयोजित वेबिनार में महिला उद्यमियों ने बताया, वे कैसे अपने काम के जरिए सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान दे रही हैं।

इस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर इंडिया एक्ज़िम बैंक ने उन महिलाओं को सम्मानित किया, जो विशेष रूप से ग्रासरूट स्तर के व्यवसायों में संपोषी और युगांतकारी परिवर्तन ला रही हैं। 'महिला उद्यमियों का सशक्तीकरण' वेबिनार में इन महिलाओं ने बताया कि वे कैसे अपने काम के ज़रिए सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान दे रही हैं और किस तरह आज हमारे समाज का कल बना रही हैं।

स्त्री समस्याओं और सामाजिक अस्वीकृति पर भी हो चर्चा

इसी तरह महिला अधिकारियों के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक जानी-मानी निर्माता, निदेशक, स्टेज और स्क्रीन अभिनेत्री सुश्री महाबानू मोदी कोतवाल का व्याख्यान रखा गया और उसके बाद चर्चा-परिचर्चा सत्र रखा गया।

उन्होंने महिलाओं से संबंधित समस्याओं और सामाजिक अस्वीकृति जैसे मसलों पर अपने विचार साझा किए। सुश्री महाबानू 90 के दशक की भारत की पहली महिला स्टैंड-अप कलाकारों में से एक हैं। नई दिल्ली कार्यालय की महिला अधिकारियों ने इन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए सुना और अतिथि वक्ता के साथ सवाल-जवाब में हिस्सा लिया।

प्रोटेक्ट द प्रोटेक्टर्स

बैंक ने 'प्रोटेक्ट द प्रोटेक्टर्स' पहल के तहत सामाजिक उद्यम अंडर द मैंगो ट्री प्रा.लि. के जरिए मुंबई की महिला पुलिसकर्मियों को ऑर्गैनिक शहद भेंट किया।

मैं चुनौती देती हूं...

आज महिलाएं दमखम के साथ बढ़ रही हैं, तो समाज की बुराइयों को चुनौती भी दे रही हैं। बैंक में महिला दिवस पर महिला अधिकारियों के लिए फेसबुक पोस्ट प्रतियोगिता हुई। पुरस्कृत अनूदित पोस्ट्सः

सौम्या शुक्ला

मैं चुनौती देती हूं, उस व्यवहार को जब किसी व्यक्ति को उसके काम से न मापकर, महिला या पुरुष होने के आधार पर मापा जाता है। करुणा, संरक्षण, निडरता, प्रतिस्पर्धात्मकता, स्पष्टवादिता के लिए महिलाओं और पुरुषों, दोनों को ही सराहा जाना चाहिए। स्त्रीत्व और पौरुष कुछ नहीं होता, केवल मानवता होती है।

#ChooseToChallenge #indiaeximiwd2021

50 13 कमेंट्स

श्रुति शिंदे

मैं चुनौती देती हूं "औरत की ख़ूबसूरती मापने वाली उस पुरानी परंपरा को, जिसमें औरत का रंग और बाहरी आकर्षण ही सब कुछ होता है, और आशा करती हूं कि वर्तमान समाज, अब औरत के चेहरे के निशानों, उसके शरीर और रंग के पीछे के आंतरिक सौंदर्य की चमक को देखना सीख जाएगा।"

#ChooseToChallenge #indiaeximiwd2021

31 01 कमेंट

अर्चना मदान

मैं चुनौती देती हूं कि "महिलाएं खुले आसमां से ज़मीन तक दुनिया की हर चीज़ की हक़दार हैं, उसे पाने के योग्य हैं। क्या कोई है जो दृढ़ता और माफ़ी देने में महिलाओं का मुक़ाबला कर पाए।"

#ChooseToChallenge#indiaeximiwd2021

29 6 कमेंट्स

जिस्म से रूह में उतर आए तेरा हर अवतार

इस जगत के पास वो आंखें कहां हैं
हर जिस्म से होती रूह पाक जहां है
हर सीने में बसा जब रब का ही रूप
नहीं फिर भी नसीब में एक टुकड़ा धूप
अजनबी अपने ही घर का है आकाश
क्यों हर बार वैदेही ही भोगे वनवास
या ख़ुदा ये नारी की तक़दीर कैसी है
सुना था मैंने वो तो होती तेरे ही जैसी है
फिर क्यों भला भोग रही वो चीरहरण
क्या तेरा ही रूप है ये कुटिल दुःशासन
आज महिला दिवस पर दे दो ये उपहार
जिस्म से रूह में उतर आए तेरा हर अवतार
देनी पड़ी थी सीता को भी यहां अग्नि परीक्षा
छोटी हो या बड़ी क्यों नारी को हमेशा ही दी जाती है भिक्षा
पत्नी से पति का रिश्ता है बहुत ही गहरा
जन्मदात्री है नारी फिर भी पुरुष लगा के रखता है उस पर पहरा
सीप से मोती का, नयन से ज्योति का
बेटी से पिता का, बहन से भाई का, हर रिश्ता है अनमोल
कब जानेगा इस युग का मानव, इस सब का मोल
मां के रूप की कोई तुलना नहीं
उसके चरणों से ज़्यादा अच्छी कोई जगह नहीं
बनकर आई इस दुनिया में मां लक्ष्मी का ये अवतार
क्यों भूल गए ईश तुम, लिखना इसके भाग्य में प्यार
आज महिला दिवस पर, दे दो ये उपहार
जिस्म से रूह में उतर आए, तेरा हर अवतार

अर्चना मदान
मुख्य प्रशासनिक प्रबंधक, नई दिल्ली कार्यालय

वो हर इक पल का शायर है...

हर इक पिक्सल में एक कहानी है। एक याद है। एक साथ है। अगर लंबे समय को मापने की इकाई साल है तो यह छः साल का साथ है।

हर तस्वीर कुछ कहती है: यह तस्वीर सबसे लंबे समय तक नई दिल्ली कार्यालय के क्षेत्रीय प्रमुख रहे मुख्य महाप्रबंधक तरुण के मुंबई स्थानांतरित होने के तुरंत बाद की है। तस्वीर में दाएं हैं, हाल ही में सेवानिवृत्त हुए तत्कालीन मुख्य महाप्रबंधक नदीम, जिनके ज़रिए नई दिल्ली कार्यालय के उनके सहकर्मियों ने अपने स्नेह की पोटली उन तक पहुंचाई। बाईं ओर हैं प्रबंध निदेशक, जो उन्हें नई दिल्ली कार्यालय की प्रगति के लिए सराह रहे हैं। और बीच में नज़रें झुकाए 'शर्मा जी' कुछ तो छुपा रहे हैं। कुछ छूट जाने का दर्द, कुछ अपनों से बिछड़ने का दर्द, यादों की उस पोटली को बांधे वहां से निकलने का दर्द। कुछ यादें जो हम में से कोई नहीं भूलेगा। ये दर-ओ-दीवार भी जैसे गुनगुनाते रहे हैं, *"मैं हर एक पल का शायर हूं..."* और जो साथ था, वह तो बना ही रहेगा।

राजभाषा में काम, हमारा स्वाभिमान

2020 को हम यादों के कैलेंडर से भले ही मिटाना चाहें, लेकिन यह साल बहुत कुछ सिखा भी गया। सिखा गया कि छोटी-छोटी कोशिशें और छोटी-छोटी पहलें ही रंग लाती हैं। नई दिल्ली कार्यालय को ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयासों के ज़रिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में वित्तीय संस्थाओं की श्रेणी में दिल्ली बैंक नराकास से प्रथम पुरस्कार मिला है।

नराकास के तत्वावधान में प्रतियोगिता: नई दिल्ली कार्यालय द्वारा ऑनलाइन 'कहानी अधूरी, करें इसे पूरी' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के 19 कर्मियों ने हिस्सा लिया।

इंडिया एक्ज़िम बैंक
India Exim Bank

ऑफिस ब्लॉक, टावर 1, 7 वीं मंज़िल, एड्जेसेंट रिंग रोड,
किदवई नगर (पूर्व), नई दिल्ली – 110 023

फोन : 91-11-2460 7700

वेबसाइट : www.eximbankindia.in | www.eximmitra.in